www.vinoba.in

भूदान-यज्ञ

भूदान-यज्ञ मूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देशवाहक—साप्ताहिक

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

वर्ष : १५ अंक : ३८

सोमवार २३ जून, '६९

शिक्षा का अभिप्राय

अहिंसक प्रतिरोध सबसे उदात्त और बढ़िया शिक्षा है। वह बच्चों को मिलनेवाली साधारण अक्षर-ज्ञान की शिक्षा के बाद नहीं, पहले होनी चाहिए। इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि बच्चे को, वह वर्णमाला लिखे और सांसारिक ज्ञान प्राप्त करे उसके पहले, यह जानना चाहिए कि आत्मा क्या है, सत्य क्या है, प्रेम क्या है, और आत्मा में क्या-क्या शक्तियाँ छिपी हुई हैं। शिक्षा का जरूरी अंग यह होना चाहिए कि बालक जीवन-संग्राम में प्रेम से घृणा को, सत्य से असत्य को और कष्ट-सहन से हिंसा को आसानी के साथ जीतना सीखे। इस सत्य का बल अनुभव करने के कारण ही मैंने सत्याग्रह-संग्राम के उत्तरार्ध में पहले टाल्स्टाय फार्म में और बाद में फिनिक्स आश्रम में बच्चों को इसी ढंग की तालीम देने की भरसक कोशिश की थी।[१]

मेरी राय में बुद्धि की सच्ची शिक्षा शरीर की स्थूल इन्द्रियों अर्थात् हाथ, पैर, आँख, कान, नाक वगैरा के ठीक-ठीक उपयोग और तालीम के द्वारा ही हो सकती है। दूसरे शब्दों में, बच्चे द्वारा इन्द्रियों का बुद्धिपूर्वक उपयोग उसकी बुद्धि के विकास का उत्तम और जल्द-से-जल्द तरीका है। परन्तु शरीर और मस्तिष्क के विकास के साथ आत्मा की जागृति भी उतनी ही नहीं होगी, तो केवल बुद्धि का विकास घटिया और एकांगी वस्तु ही साबित होगा। आध्यात्मिक शिक्षा से मेरा मतलब हृदय की शिक्षा है। इसलिए मस्तिष्क का ठीक-ठीक और सर्वांगीण विकास तभी हो सकता है, जब साथ-साथ बच्चे की शारीरिक और आध्यात्मिक शक्तियों की भी शिक्षा होती रहे। ये सब बातें अविभाज्य हैं, इसलिए इस सिद्धान्त के अनुसार यह मान लेना घोर कुतर्क होगा कि उनका विकास अलग-अलग या एक-दूसरे से स्वतंत्र रूप में किया जा सकता है।[२]

शिक्षा से मेरा अभिप्राय यह है कि बच्चे और मनुष्य के शरीर, बुद्धि और आत्मा के सभी उत्तम गुणों को प्रकट किया जाय। पढ़ना-लिखना शिक्षा का अन्त तो है ही नहीं, वह आदि भी नहीं है। वह पुरुष और स्त्री को शिक्षा देने के साधनों में से केवल एक साधन है। साक्षरता स्वयं कोई शिक्षा नहीं है। इसलिए मैं तो बच्चे की शिक्षा का प्रारम्भ इस तरह करूँगा कि उसे कोई उपयोगी दस्तकारी सिखायी जाय और जिस क्षण से वह अपनी तालीम शुरू करे, उसी क्षण से उसे उत्पादन का काम करने योग्य बना दिया जाय।[३]

मो. क. गांधी

(१) "स्पीचेज एण्ड राइटिंग्स आफ महात्मा गांधी", चौथा संस्करण; पृष्ठ १८६,
(२) "हरिजन" : ८-५-'३७, (३) "हरिजन" : ३१-७-'३७।

अन्य पृष्ठों पर

आन्दोलन जनता के हाथों में सौंपें —शं० जगन्नाथन् ४६६
जे० पी० के भाषण पर प्रतिक्रियाएँ —सम्पादकीय ४६७
एक निरुपाधिक मानव : बादशाह खाँ —खादिम ४६९
राज्यदान से ग्रामस्वराज्य का सहज विकास अनिवार्य —राममूर्ति ४७०
अर्थ की समस्या...माँगने के अनुभव —सिद्धराज ढड्ढा ४७३
क्या तरुणों की इस बात पर ध्यान दिया जायेगा ? —अभय बंग ४७४
तरुण शान्ति-सेना का घोषणा-पत्र ४७५
अ० भा० समाजसेवी संस्थाओं का सम्मेलन —गुरुशरण ४७९

अन्य स्तम्भ

संपादक के नाम चिट्ठी
आन्दोलन के समाचार

मरण का सदा स्मरण रखना पाप से मुक्त रहने का एक उपाय है। —विनोबा

सम्पादक
राधा भट्ट

सर्व सेवा संघ प्रकाशन
राजघाट, वाराणसी—१, उत्तर प्रदेश
फोन : ४२८५

लोकसेवकों, जिला तथा प्रान्तीय सर्वोदय मण्डलों की सेवा में :

www.vinoba.in

आन्दोलन जनता के हाथों में सौंपें

[सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष श्री शं० जगन्नाथन् ने यह पत्र हिन्दी में ही लिखकर भेजा है, जिसे हम अत्यल्प संशोधन के साथ प्रकाशित कर रहे हैं। तिरुपति में अध्यक्ष महोदय ने घोषणा की थी कि वे शीघ्र ही हिन्दी का पर्याप्त अभ्यास कर लेंगे। —सं०]

प्रिय बंधु,

नमस्ते ! हमने ग्रामदान-तूफान-आंदोलन द्वारा बहुत उन्नति की है। यह बात इतिहास-प्रसिद्ध हो गयी है कि भारत में १ लाख गाँवों, ७०० प्रखण्डों और १६ जिलों का दान हो गया है। न केवल हमारे देश के लिए, बल्कि समूची दुनिया के लिए यह एक क्रान्तिकारी घटना है।

गत १७ वर्षों से जो आंदोलन चल रहा है, उसके मूल पुरुष के रूप में भगवान की कृपा से विनोबाजी हमको मिले हैं। उनके अलावा सर्वश्री जयप्रकाशजी, शंकररावजी, दादा धर्माधिकारीजी और धीरेन्द्र भाई आदि नेताओं का नेतृत्व भी हमें प्राप्त हुआ है। हजारों कार्यकर्ताओं ने लगातार आंदोलन में भाग लिया है। सामान्य जनता का हाथ भी इसमें है। विनोबाजी ने सन् १९५६ में ही इसे जन-आंदोलन बनाने के लिए भूदान-कमेटियों का विसर्जन कर दिया था। इतने साल बीतने पर भी यह जन-आन्दोलन का रूप नहीं ले सका, इसका कारण क्या है ? क्या आंदोलन के संचालन में या उसके उद्देश्य में कमियाँ होने के कारण जनता इसमें भाग नहीं लेती ? या आन्दोलन का उद्देश्य उन्हें आकर्षित नहीं करता ? अथवा कार्यकर्ताओं की कार्य-पद्धतियों, योजनाओं आदि के ठीक न होने के कारण ऐसा हुआ ? हमें इसके असली कारण के बारे में ध्यान से सोचना होगा।

हममें से कुछ लोगों का इस पर विश्वास होने से कि जब हम इतना कर सके हैं, तब अगर अधिकतर लोगों, मुख्यतः ग्रामवासियों तथा किसानों को इस पर विश्वास हो जाय तो समाज में महत्त्वपूर्ण क्रांति या परिवर्तन हो सकता है। अब आगे सिर्फ कार्यकर्ताओं द्वारा आंदोलन चालू रखना लाभदायक नहीं होगा। कार्यकर्ताओं को आंदोलन जनता के सामने रखकर उनको काम में लगाना चाहिए।

हमारे आंदोलन की कार्य-पद्धति में परिवर्तन करने का समय अब आ गया है। हमें इसमें और देरी नहीं करनी चाहिए, नहीं तो जैसे जनता राजनीतिक दलों पर विश्वास खो रही है वैसे ही एक दिन सर्वोदय-आन्दोलन के प्रति भी विश्वास खो देगी। हमें बताना है कि लोगों द्वारा अपनी तरफ से आंदोलन चलाने का क्या रास्ता है ?

आज कार्यकर्ता ही गाँव-गाँव जाकर ग्रामदान-पत्रों पर हस्ताक्षर लेते हैं। इसके बदले वे क्या यह नहीं कर सकते कि गाँव में कुछ सर्वोदय-प्रेमियों को ढूँढ़कर उन्हींके द्वारा हस्ताक्षर प्राप्त करें ? हम विचार-प्रचार में मदद कर सकते हैं, अथवा पत्र-पत्रिका और साहित्य प्रकाशित करके उनकी मदद कर सकते हैं, लेकिन हस्ताक्षर लेने का काम तो ग्रामवासियों के हाथों में ही सौंपना चाहिए। गाँव में ही सर्वोदय-प्रेमियों को ढूंढ़ लेना सर्वोदय-सेवकों का पहला काम है। हम ऐसे कुछ लोगों को ले सकते हैं, जो अपनी जमीन का बीसवाँ हिस्सा दान देंगे या एक दिन एक पैसा के हिसाब से एक साल में ३ रुपया ६५ पैसा देंगे, या सर्वोदय-पात्र में रोज एक मुट्ठी अनाज-दान देंगे, या रोज सूत कातकर महीने में एक गुण्डी सूत दान देंगे। हम ऐसे कुछ लोकसेवकों को गाँव में ढूँढ़ सकते हैं, जो किसी दल या सत्ता की राजनीति में भागीदार नहीं होना चाहते। यदि शान्ति-सेना में युवक भर्ती होना चाहें तो उनका सहयोग हम हासिल कर सकते हैं। क्या हरएक पंचायत में ऊपर बताये नियमों पर अमल करनेवाले सर्वोदय-प्रेमी नहीं मिल सकते ? यदि हम कोशिश करें तो निश्चय ही ऐसे अनेक लोगों का सहयोग प्राप्त कर सकते हैं। हम पंचायत-स्तर पर ऐसे सदस्यों से सर्वोदय-मंडल का निर्माण कर सकते हैं। पहले यही करना चाहिए। क्या ऐसे सर्वोदय-मंडलों की सभा बुलाकर, ग्रामदान का विचार उन्हें समझाकर उनमें इसके प्रति विश्वास जगाकर इनके हाथों में ग्रामदान के लिए हस्ताक्षर प्राप्त करने का काम नहीं सौंप सकते ?

एक प्रखण्ड में औसतन ३० या ४० पंचायतें होती हैं। हर पंचायत के ५ सदस्य और प्रान्त के २०० सर्वोदय-प्रेमी मिलें तो तूफान का वेग तेज ही होगा। पहले प्रखण्ड के स्तर पर सर्वोदय-मंडल का निर्माण कर सकते हैं। इसके बाद जिला सर्वोदय-मंडल का निर्माण होगा।

इसकी कल्पना करते ही हमारी आँखों के सामने एक अद्भुत दृश्य खड़ा होता है। एक जिले में औसतन ३० प्रखंण्ड होते हैं। योजनानुसार हरएक जिले में ५००० से अधिक सर्वोदय-सेवक आन्दोलन में भाग लेंगे। यही होगा हमारा जन-आंदोलन। पू०बाबा की राय भी यही थी। इस प्रकार की रचना के सहारे एक महान् क्रान्ति बहुत शीघ्र ही हो सकती है। जाहिर है कि आपके गाँव के आसपास निम्नानुसार कार्यक्रम में भाग लेनेवालों का सहयोग हासिल करके जन-आंदोलन चलाया जा सकता है :

(१) अपनी जमीन के बीसवें भाग का दान देनेवाले,

(२) प्रतिदिन एक पैसा के हिसाब से एक साल में रु० ३.६५ देनेवाले,

(३) सर्वोदय-पात्र में रोज एक मुट्ठी भर अनाज दान देनेवाले,

(४) रोज सूत कातकर एक महीने में एक गुण्डी सूत देनेवाले, और

(५) महीने में एक दिन का श्रमदान देनेवाले।

आप ऐसे लोगों की खोज करके पंचायत में सर्वोदय-मंडलों का निर्माण कीजिए। सब पंचायतों में सर्वोदय-मंडल निर्मित करके समूचे प्रखण्ड के सर्वोदय-प्रेमियों की सभा बुलाकर कम-से-कम १० या १५ सदस्यों का सर्वोदय-मंडल बनाइए।

ऊपर मैंने जो कुछ सुझाया है, उसके बारे में अपनी राय लिखिए। अगर आप इसे ठीक समझते हों, तो इस काम में फौरन लग जाइए। अगर हम इसमें सफल होंगे तो अहिंसक क्रान्ति पूरी होगी, और ग्रामस्वराज्य की शीघ्र ही स्थापना हो सकेगी।

—शं० जगन्नाथन्

www.vinoba.in

सम्पादकीय

जे०पी० के भाषण पर कुछ प्रतिक्रियाएँ

पिछले अंक में हम जे० पी० का वह भाषण, जिसे उन्होंने गांधी जन्म-शताब्दी के तत्वावधान में ऐच्छिक-सेवा-संस्थाओं के सामने दिल्ली में दिया था, छाप चुके हैं। इस बार हम उस पर कुछ प्रतिक्रियाएँ छाप रहे हैं।

जे० पी० की दुविधा भारत की समस्या

दिल्ली के दैनिक अंग्रेजी 'हिन्दुस्तान टाइम्स' (बिड़ला ग्रुप) ने १५ जून के अंक में लिखा है :

"सामान्यतः शांत जयप्रकाश नारायण गुस्से में हैं। किसी भी सच्चे गांधीवादी को इतने न किये गये कामों को देखकर सन् '६९ के गांधी शताब्दी-वर्ष में गुस्सा आना ही चाहिए।"

"अपने उद्घाटन-भाषण में श्री नारायण ने बिहार और बंगाल के बँटाईदारों की बात कही है। उन्होंने पूछा है कि अगर सभ्य कहलानेवाला राजनैतिक समाज इन अभागे ग्रामीण मेहनतकश लोगों के दुःख नहीं दूर कर सकता तो नक्सालवादियों की क्यों निन्दा की जाय? वास्तव में सन् १९६९ में कोई सरकार या पार्टी ईमानदारी के साथ नहीं बता सकती कि बँटाईदारों का इतना नंगा शोषण क्यों हो रहा है—खासकर पूर्वी और दक्षिणी भारत में?···क्या आश्चर्य कि निराश और क्षुब्ध बँटाईदार नक्सालवादी के बताये हुए हिंसक समाधान की ओर मुड़ रहा है!"

"श्री नारायण समस्या का यह हल सुझा रहे हैं कि सामाजिक व्यवस्था में आमूल क्रान्ति हो, अहिंसक क्रान्ति द्वारा सर्वोदय समाज की स्थापना हो। पिछले अनेक वर्षों से वह खुद आचार्य विनोबा भावे के साथ ग्रामदान-आन्दोलन में शरीक हैं, और उस आन्दोलन ने बिहार में उल्लेखनीय सफलता भी प्राप्त की है। अगर यह प्रयोग दान से आगे बढ़ाकर वास्तविक अमल और पुनर्वितरण तक ले जाया जा सके तो अब भी प्रश्न का उत्तर मिल सकता है, या कम-से-कम ऐसी जगह पहुँचा जा सकता है जहाँ भूमि-सुधार कानून का परिचित सहारा लिया जा सके। हम इसको यह कहकर नहीं टाल सकते कि बंगाल, बिहार की स्थानीय समस्या है। समृद्ध पंजाब में भी 'हरी क्रान्ति' ने बड़े किसान को फायदा पहुँचाया है, तथा उसके तथा छोटे किसान और खेतिहर मजदूर के बीच की खाई चौड़ी कर दी है। नये तनाव बढ़ रहे हैं, और उनके नये हल ढूँढ़े जाने चाहिए—आज ही ढूँढे जाने चाहिए।"

"श्री नारायण ने गांधीजी के नमक सत्याग्रह की तरह बड़े पैमाने पर लोक-आन्दोलन की भी सलाह दी है। लेकिन इसके लिए एक लक्ष्य (काज) और एक प्रतीक चाहिए। दोनों अनुपस्थित हैं। फिर भी देश भर में अनेक व्यक्ति हैं, और संस्थाएँ हैं, जो अपनी शक्ति से कुछ करना चाहेंगी। लेकिन नौकरशाही और लाल फीते की ऐसी व्यापक माया है कि बिना उसकी मदद या समर्थन के खुद आगे बढ़कर बहुत कुछ किया नहीं जा सकता। इससे भी किसी काम में बहुत देर होती है, और निराशा होती है। इसलिए अगर गैर-सरकारी अभिक्रम में बाधाएँ आती हैं, और सार्वजनिक तौर पर परिणाम नहीं निकलता, या निकलता भी है तो रुक-रुककर, तो हिंसा का विकल्प क्या रह जाता है? यह सिर्फ श्री नारायण की दुविधा नहीं है। यह भारत की समस्या है।"

एक महत्त्वपूर्ण चेतावनी

दिल्ली के अंग्रेजी कम्युनिस्ट साप्ताहिक 'मेनस्ट्रीम' ने १४ जून के अंक में लिखा है :

"यह मालूम है कि श्री जयप्रकाश नारायण का अहिंसा और सर्वोदय में विश्वास काफी दिनों का है। उनके मन में साम्यवाद के लिए सहानुभूति की विरोधी भावना है, और हिंसा से घृणा भी है। इतने पर भी अगर उन्होंने सार्वजनिक तौर पर नक्सालवादियों के प्रति सहानुभूति यह कहकर कि 'वे जनता के लिए कुछ कर तो रहे हैं,' प्रकट की है तो उसे इस दृष्टि से देखना चाहिए कि हमारे देश में लोकतांत्रिक प्रशासन सामान्य जन की समस्याओं को हल करने, और निहित स्वार्थों के प्रहार से उनकी रक्षा करने में विफल रहा है।"

"···साहस के साथ सत्य कहने के लिए कुछ पूँजीवादी अखबारों ने उनका उपहास किया है। एक अखबार ने उनके भाषण में 'अनियंत्रित क्रोध' देखा है। उन्होंने स्पष्ट कहा है कि जब तक ये स्वार्थ सामान्य लोगों का शोषण करेंगे, और कानून अधिकांश जनता के अधिकारों की रक्षा करने में असमर्थ रहेगा, तब तक जनता की निन्दा इसलिए नहीं की जा सकती कि वह हिंसा पर उतारु हो गयी है।"

"श्री नारायण की चेतावनी पर राजनीति की सभी धाराओं के लोगों को गम्भीरतापूर्वक ध्यान देना चाहिए। जो लोग सत्ता में हैं उन्हें चेतावनी लेनी चाहिए कि किसी तरह कुछ करते जाने और यथा-स्थिति (स्टेटस-को) बनाये रखने की नीति से जनता का विश्वास उठ रहा है, यहाँ तक कि जो तिरस्कृत और वंचित हैं वे हिंसा का सहारा लेने को विवश हो रहे हैं। यह चेतावनी आपस में लड़नेवाले वामपंथी गुटों के लिए भी है कि एक न्यायपूर्ण सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था कायम करने के लिए कहीं ज्यादा संकल्पनिष्ठ और सार्थक एकता की जरूरत है; यह भी जरूरी है कि आपस की तुच्छ ईर्ष्याएँ और झगड़े दृढ़तापूर्वक अलग रखे जायँ। अहिंसक लोक-आन्दोलन का उनका आवाहन गांधीवादी और अव्यावहारिक मालूम हो सकता है, लेकिन इसमें सन्देह नहीं कि एक जन-आन्दोलन से, जिसका नेतृत्व प्रगति और बुनियादी परिवर्तन चाहनेवाली शक्तियाँ करती हों, शोषण का अन्त कर सकता है, और जनता अपनी सही स्थिति में पहुँच सकती है। किसीको हिंसा हिंसा के लिए पसंद नहीं होती—सिवाय उनको जो पागल-जैसे हैं। हमारे देश में आज जो परिस्थिति है उसमें शान्ति-

पूर्ण जन-आन्दोलन से स्थायी परिणामों का निकलना अनिवार्य है, और उससे भावी लोकतांत्रिक समाज के लिए विस्तृत, व्यापक आधार भी बनेगा। लेकिन इस तरह का आन्दोलन अहिंसक रह सकेगा या नहीं, यह इस बात पर निर्भर है कि अधिकारी न्याय की माँग को कहाँ तक सुनते हैं। अगर वे कल्पना और ईमानदारी से काम लेंगे तो क्रान्ति के लक्ष्य पूरे हो जायेंगे, अगर नहीं तो आग का भड़कना नहीं रोका जा सकता। तब बहुत नुकसान होगा। श्री नारायण के निर्भीक भाषण में यह चेतावनी छिपी हुई है। उसकी उपेक्षा करना घातक होगा।"

निराशा

कांग्रेस के बड़े नेता, भूतपूर्व मंत्री, भारत सरकार, श्री गुलजारीलाल नंदा ने कलकत्ता में कहा है कि जयप्रकाशजी के विचार निराशा में से निकले हैं।

हमने अपने पाठकों, और ग्रामदान-ग्रामस्वराज्य आन्दोलन में लगे हुए साथियों के लिए ये उद्धरण जानबूझकर विस्तार के साथ दिये हैं। अभी कुछ दिन पहले 'इण्टक' के अध्यक्ष-पद के लिए चुने जाते समय श्री नंदा ने मजदूरों के सामने जो भाषण दिया था उसे उनके साप्ताहिक 'नवजीवन' में पढ़कर हमें यह आशा हो चली थी कि वह भी जनता की मुक्ति की शक्ति सत्ता से अलग जनता में ढूँढ़ना चाहते हैं, लेकिन अब लगता है कि हम भूल कर रहे थे। हमारी आशा गलत थी; उनकी 'निराशा' मालूम नहीं क्या है।

शेष दोनों रायें विचारपूर्ण हैं। आज की समाज-रचना में न्याय हो सकेगा यह संभव नहीं। आज की राजनीति और सरकारी कानून से समाज बदल सकेगा यह संभव नहीं। अगर समाज नहीं बदला तो हिंसा को रोकना संभव नहीं। इतनी बातें स्पष्ट हो जाने पर भरपूर कोशिश होनी चाहिए कि देश में समाज-परिवर्तन के लिए शीघ्र बड़े-से-बड़े पैमाने पर अहिंसक जन-आन्दोलन हो।

समाज-परिवर्तन में सरकार-परिवर्तन अनिवार्य है, लेकिन समाज-परिवर्तन केवल सरकार-परिवर्तन नहीं है। अहिंसक समाज-परिवर्तन का अर्थ है कि आज के ढाँचे के रहते-रहते समानान्तर ढाँचे (काउण्टर सोसाइटी) का बनना शुरू हो जाय। नये ढाँचे का बनना और पुराने का टूटना साथ-साथ। यही कारण है कि ग्रामदान-आन्दोलन बुनियादी परिवर्तन चाहनेवाले सारे ग्रामीण तत्त्वों को ग्रामसभाओं में संगठित होने और तत्काल नयी व्यवस्था कायम करने का आवाहन कर रहा है। यह काम सरकारी दफ्तरों के सामने प्रदर्शन करने या धरना—शान्तिपूर्ण ही सही—देने से नहीं होगा। यह सही है कि आज की परिस्थिति अहिंसक आन्दोलन के लिए अत्यन्त अनुकूल है। देश की कोई शक्ति—सरकार की या निहित स्वार्थों की—व्यापक, सर्जनात्मक, लोक-शक्ति के सामने नहीं खड़ी हो सकती।

इसके विपरीत, नीयत कुछ भी हो, हिंसा का आन्दोलन चाहे जितना बड़ा हो, सीमित, अत्यन्त सीमित, ही होगा। उसे एकसाथ सरकार और निहित स्वार्थों का प्रहार बर्दाश्त करना पड़ेगा, और सामान्य जनता ऊबकर या भयभीत होकर निष्क्रिय बनी रहेगी। दलगत, वर्गगत, जातिगत संघर्ष होंगे। गृहयुद्ध की स्थिति बन जायगी। उपद्रव होंगे। क्रान्ति पीछे पड़ जायगी; युद्ध में खो जायगी। एक ओर आपसी गुण्डागर्दी होगी, दूसरी ओर पुलिस का राज होगा। कुल मिलाकर परिवर्तन की विरोधी शक्तियाँ मजबूत होंगी, संगठित होंगी और 'स्टेटस-को' नये रूप में बना रहेगा।

जे० पी० की चेतावनी हम कार्यकर्ताओं के लिए भी है। हमारे लिए चेतावनी ही नहीं, चुनौती भी है। अहिंसा को शीघ्र समाज-परिवर्तन की शक्ति बनकर सामने आना है। केवल भावना, या कुछ निष्ठाओं के दायरे में सीमित रहनेवाली अहिंसा, अपनी जगह अच्छी हो सकती है, ऊँची हो सकती है, लेकिन वह इतने से हिंसा की विरोधी शक्ति नहीं बन सकती। अहिंसा को लोकशक्ति का रचनात्मक रूप देना ही ग्रामदान के बाद ग्रामस्वराज्य का काम है। अगर हम यह न कर सके तो विपरीत पद्धति अपनानेवालों को गलत कहने का हमारा अधिकार क्या रहेगा? जे० पी० ने हिंसा की नैतिक आलोचना का अधिकार छोड़ दिया है, और अहिंसा की खोज का कर्तव्य स्वीकार किया है। समाज-परिवर्तन के क्षेत्र में अहिंसा की खोज अपरिचित समुद्र की नयी यात्रा है। पार वे पहुँचेंगे जो लहरों में उतरने का साहस करेंगे। जोखिमों का हिसाब लगानेवाले किनारे ही रह जायेंगे। सन् १९४२ के बाद देश फिर 'करो या मरो' की स्थिति में पहुँच गया है। कौन जाने, अगर गांधीजी होते तो अहिंसावालों के लिए यह स्थिति शायद कुछ पहले आ जाती! खैर, थोड़ी देर हुई, लेकिन आयी।•

बिहार में प्रखण्डदान की प्रगति

जिला	प्रखण्डदान ११-५-'६९ तक	प्रखण्डदान ११-६-'६९ तक	प्रखण्डदान नये	प्रखण्डदान बाकी
दरभंगा	४४	४४	—	—
मुजफ्फरपुर	४०	४०	—	—
पूर्णिया	३८	३८	—	—
सारण	४०	४०	—	—
चम्पारण	३६	३६	—	—
गया	४६	४६	—	—
सहरसा	२३	२३	—	—
मुंगेर	३७	३७	—	—
धनबाद	१०	१०	—	—
पटना	१३	२८	१५	—
पलामू	१६	२०	१	५
हजारीबाग	७	१२	५	३०
भागलपुर	१४	१८	४	३
सिंहभूम	५	५	—	२७
संतालपरगना	१२	१६	४	२५
शाहाबाद	५	६	१	३५
राँची	—	१	१	४२
कुल :	३८९	४२०	३१	१६७

विनोबा-निवास, राँची
दिनांक : १२-६-'६९

—कृष्णराज मेहता

www.vinoba.in

एक निरुपाधिक मानव : बादशाह खाँ

"किताबों में जैसा गांधीजी के बारे में पढ़ते हैं, कुछ-कुछ वैसी ही झलक मिली—हमारे नेताओं से बिलकुल अलग। पहली नजर में नेता तो वह लगते ही नहीं। एक सन्त, एक फकीर, एक आला इनसान, एक वली की आप कल्पना कीजिए, और फिर बादशाह खाँ की तसवीर सामने लाइए। कभी-कभी ऐसा लगता है कि इतने नेक इनसान को सतानेवालों का दिल कितना कठोर होगा?"

'दिनमान' के प्रतिनिधि का यह वर्णन बादशाह खाँ पर बिलकुल फिट बैठ जाता है। जिन लोगों ने स्वतंत्रता की लड़ाई के जमाने में बादशाह खाँ, डा० खान साहब, और उनके लाल कुर्तीवाले साथियों को कभी देखा होगा उनके दिल में याद करने भर से न जाने कितनी भावनाएँ उमड़ आती होंगी! शुरू से आज तक बादशाह खाँ की जिन्दगी त्याग और तपस्या की एक अखण्ड और अमर कहानी है। बादशाह खाँ सदा सिपाही रहे, नेता कभी बने नहीं। लेकिन जनता का जो प्यार बादशाह खाँ को मिला वह क्या किसीको मिलेगा? एक निरुपाधिक मानव के ऐसे नमूने कितने हैं?

अहिंसा बादशाह खाँ के लिए कभी मात्र नीति नहीं रही। उन्होंने गांधीजी की सीख हृदय से स्वीकार की, और अहिंसा को जीवन का अटल सिद्धान्त माना। माना ही नहीं, अपनी साधना से उन्होंने जीवन और अहिंसा को पर्याय बना डाला। और, उनकी अगुआई में सीमा के पठानों ने स्वतंत्रता की लड़ाई में 'वीरों की अहिंसा' का जो उदाहरण पेश किया वह इतिहास में अद्वितीय था। कहा जाता है कि पठान बन्दूक खाता है, बन्दूक बोलता है, और बन्दूक से ही जीता है। ऐसे पठान को अहिंसा की दीक्षा दी 'सीमा के गांधी' ने, जिसने उस पठान का हाथ पीठ पर बाँधकर सीने पर अंग्रेजी बन्दूक की गोली खाने के लिए तैयार कर दिया! आज कहाँ है वह निर्वैर वीरता, और वह स्वातंत्र्य-प्रेम?

देश के विभाजन ने भारत की आत्मा को कितनी ठेस पहुँचायी इसका लेखा-जोखा कोई भावी इतिहासकार करेगा। लेकिन हमारी आँखों के सामने ठेस के जो दो सबसे बड़े शिकार हुए वे थे गांधी और सीमा के गांधी। गांधी तो गये, लेकिन सीमा के गांधी अपने ही देशवासियों के हाथों यातना भोगने के लिए रह गये। लगता है जैसे बादशाह खाँ भी फाँसी के लिए तैयार फ्रांस के क्रान्तिकारी रोब्सपियर के साथ कह रहे हों: 'स्वतंत्रते, तू कितनी विश्वासघातिनी है?'

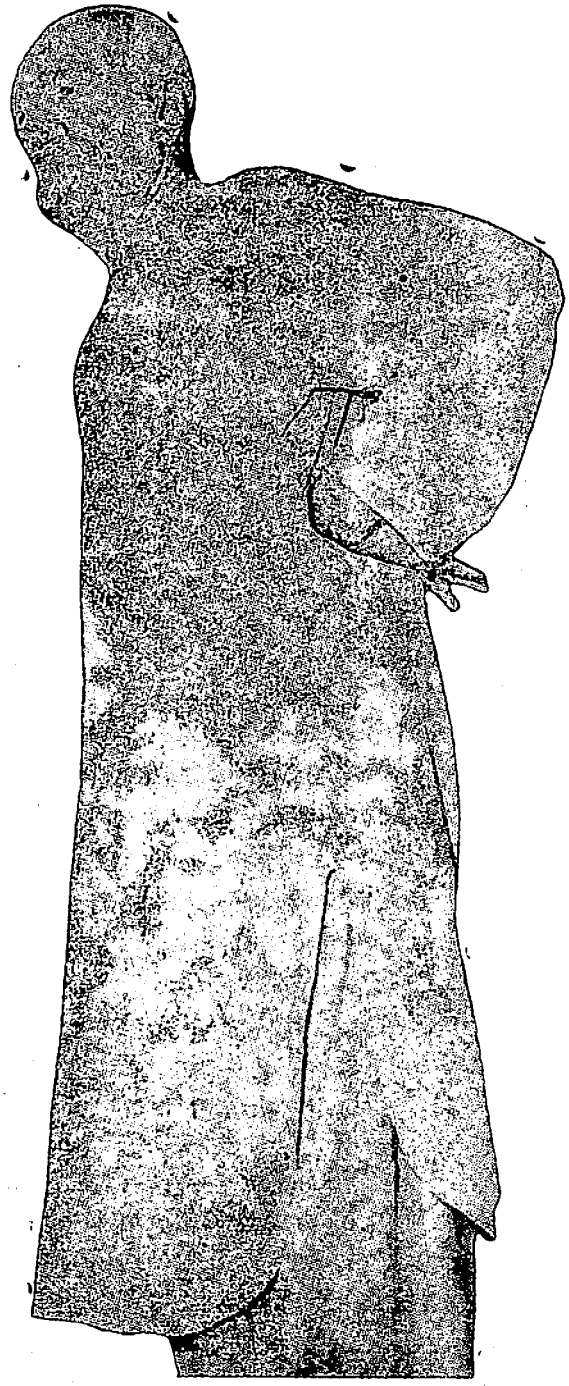

बादशाह खाँ

भारत और पाकिस्तान की स्वतंत्रता से एक यह बात सिद्ध हो गयी है कि देश की स्वतंत्रता एक चीज है, और देश में रहनेवाली जनता की स्वतंत्रता बिलकुल दूसरी। उस दूसरी स्वतंत्रता के बिना पहली का बहुत महत्व नहीं रह जाता। ये दोनों देश ऐसे हैं जिनमें दूसरी स्वतंत्रता अभी नहीं आयी है। बादशाह खाँ पहली स्वतंत्रता की लड़ाई में तो आगे थे ही, आज दूसरी स्वतंत्रता की लड़ाई में भी आगे हैं। जब तक जीयेंगे आगे रहेंगे। पराजय या निराशा उनके जीवन में है ही नहीं।

बादशाह खाँ अक्तूबर में भारत आ रहे हैं। उनका हजार-हजार स्वागत!

—खादिम

www.vinoba.in

राज्यदान से ग्रामस्वराज्य का सहज विकास अनिवार्य

बीच का "वैकुअम" खतरनाक

राममूर्ति

राज्यदान के संदर्भ में जिलादान के आगे का प्रश्न प्रस्तुत है। मैं कुछ बातों की ओर ध्यान दिलाना चाहता हूँ। एक-दो नहीं, पूरे १८ वर्षों से इस काम में लगे हुए साथियों की संख्या कम नहीं है; बहुत है। लेकिन आज तक हमारी स्थिति कुछ उस लड़की जैसी ही रही है, जो एक स्कूल में चित्रकला की विद्यार्थी थी। रोज शिक्षक आता था और क्लास में कोई-न-कोई नमूना रखकर विद्यार्थियों से कहता था कि इसे देखकर चित्र बनाओ। प्रतिदिन कोई नयी चीज होती थी। उसे देखकर विद्यार्थी चित्र बनाते थे और बनाकर अपने शिक्षक को दिखाते थे। एक रोज शिक्षक के मन में कुछ दूसरी बात आयी। उसने कहा कि जो चीज तुम्हें सबसे ज्यादा पसंद हो उसकी तसवीर बनाओ। बच्चों ने, जो चीज जिसे पसंद थी उसकी तसवीर बनायी। बाद को शिक्षक ने एक-एक बच्चे को बुलाया और कहा, अपनी तसवीर दिखाओ। हर एक ने दिखाई। जब लड़की की बारी आयी तो वह चुपचाप खड़ी हो गयी। शिक्षक को बहुत नाराजगी हुई। उसने सोचा कि इसने चित्र बनाया ही नहीं। शिक्षक की त्योरी देखकर वह लड़की घबड़ा गयी। स्कूल नयी तालीम का तो था नहीं। डंडाप्रधान शिक्षण था। शिक्षक ने कापी देखी तो बिलकुल कोरी! पूछा, तुमने क्या किया? उस लड़की ने जवाब दिया—"क्या करूँ, जो चीज मुझे सबसे ज्यादा पसन्द थी उसकी शकल कैसी है, मुझे मालूम नहीं था।" शिक्षक ने डाँटकर पूछा तो वह दबी जबान से बोली—"मास्टर साहब, मुझे सबसे ज्यादा पसन्द छुट्टी है। उसका चित्र कैसे बनाऊँ? सचमुच बच्चों को छुट्टी से ज्यादा पसंद दूसरी क्या चीज होगी? हम लोग १८ वर्षों से मुक्ति का नाम लेते रहे हैं लेकिन उसकी क्या शकल होती है, यह मालूम नहीं था। अब इतने वर्षों के बाद चतुर कलाकार ने कुछ ऐसी स्थिति पैदा कर दी है कि राज्यदान के साथ आगे का चित्र कम-से-कम मोटी रेखाओं में दिखाई देने लग गया है, और अब हम यह कह सकते हैं कि हमारा आन्दोलन हमारी इच्छाओं और निष्ठाओं का आन्दोलन नहीं है बल्कि जनता की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं का आन्दोलन है। जनता चाहती है राजनीति बदले, अर्थनीति बदले और शिक्षानीति बदले। राज्यदान के बाद यह परिवर्तन संभव होना चाहिए। यह परिवर्तन कैसे हो, और परिवर्तित स्वरूप क्या हो, यह सारा प्रश्न हमारे सामने है।

एक विशेष मनोवैज्ञानिक परिस्थिति

जिलादान के बाद क्या? यह प्रश्न उत्तरित भी है, और अनुत्तरित भी। उत्तरित इस अर्थ में है कि जिलादान के बाद राज्यदान है। रुकने की कोई बात नहीं है। अनुत्तरित इस रूप में है कि बावजूद इसके कि यह बात इतने वर्षों से हो रही है, और आज हम राज्यदान के करीब पहुँच रहे हैं, कार्यकर्ताओं को यह अनुभूति नहीं होती कि हम छोटे आदमी हैं लेकिन काम बहुत बड़ा कर रहे हैं। और जनता को यह अनुभूति नहीं हो रही है कि जो परिवर्तन हम चाहते थे उसका दरवाजा इसके द्वारा खुल रहा है। हम देख रहे हैं एक गिरावट, एक 'डिप्रेशन' चारों ओर है। जिलादानी क्षेत्रों में भी है। तो मुझे ऐसा लगता है कि जिलादान के बाद तत्काल जो काम करने का है वह इस गिरावट को रोकने का है। हमारे सारे काम का आधार है विचार की शक्ति। इस आन्दोलन में इस वक्त ऐसी मनोवैज्ञानिक स्थिति है कि फौरन निर्णय करके कोई उपाय करना जरूरी है। इस अर्थ में यह प्रश्न अनुत्तरित रह जाता है। ग्रामदान के आगे की बात यह है कि जहाँ कहीं हमको गिरावट दिखाई देती है उसको रोकना चाहिए। यह वक्त नहीं है कि हम ग्रामदान की शव-परीक्षा करने बैठें कि कितने ग्रामदान हमारे पक्के हुए हैं, कितने कच्चे हुए हैं, कितने मिले-जुले हुए हैं और कितने बिलकुल हुए ही नहीं हैं। यह सारी शव-परीक्षा करने की जरूरत नहीं है, और शायद संभव भी नहीं है। अगर इसको करने बैठेंगे तो दूसरों की आलोचना के पात्र बनेंगे, और आत्म-विश्वास भी खोयेंगे। एक मनोवैज्ञानिक परिस्थिति राज्यदान से बन रही है जिसको मानकर हम भरोसे के साथ आगे का जोरदार कदम उठा सकते हैं। इसमें संदेह की कोई बात नहीं है। आज समाज को विकल्प की भूख है। वह चाहता है कि आज की परिस्थिति से निकलने का कोई रास्ता दिखाई दे। नहीं दिखाई देता है तो वह बेचैन होता है। अगर हम कोई रास्ता दिखा सकेंगे तो उसकी जो भूख है वह मिटेगी।

ग्रामस्वराज्य का नयापन

लेकिन इस जगह एक चिंता पैदा होती है। इस अनुकूल मनोवैज्ञानिक परिस्थिति से लाभ उठाने की शक्ति और सामर्थ्य हमारे अंदर है या नहीं। ऊँचे इरादे रखनेवाले और ऊँचे हौसले रखनेवाले लोग भी अपने काम को अधकचरा छोड़कर हट जाते हैं; पराजित हो जाते हैं; विफल हो जाते हैं। यह ठीक है कि क्रान्तिकारी और शहीद कभी हार नहीं मानता। वह विफल हो जाता है लेकिन पराजित नहीं होता। लेकिन समाज का जब झटका लगता है तो वह उस झटके से बहुत दिनों तक ऊपर नहीं उठ पाता। समाज को राज्यदान के रास्ते पर लाकर, पहुँचाकर, अगर हम वह शक्ति नहीं पैदा करते हैं कि समाज अगला कदम उठा सके तो उसका कितना भयंकर परिणाम होगा, उसकी कल्पना की जा सकती है। अगर इतना ही होता कि हमारी जिन्दगी खराब होती तो कोई बात नहीं थी, लेकिन यह तो पूरे समाज का प्रश्न है, देश का प्रश्न है, करोड़ों का प्रश्न है, मुक्ति का प्रश्न है। इसलिए यह चिंता का विषय बन जाता है। हमें चाहिए कि हम अपने आन्दोलन को बारीकी के साथ समझें। आज कितने ही ऐसे साथी हैं जो पूछने पर यह नहीं बता पाते कि ग्रामस्वराज्य के सत्व क्या हैं। अगर गाँव का कोई आदमी पूछता है कि बताइए ग्रामस्वराज्य में क्या-क्या बातें हैं तो वे नहीं

www.vinoba.in

बता पाते। उनको मालूम ही नहीं है। इधर-उधर की कुछ सुनी हुई बातें जोड़जाड़कर कुछ कह देते हैं। सोचिए, इससे काम कैसे चलेगा? बहुत सारे गाँवों के ग्रामदान हमारे कहने से हो गये लेकिन ग्रामस्वराज्य का काम ऐसा है जिसमें ऐसी कोई चीज ही नहीं है जो गाँववालों के किये बिना भी पूरी हो सके। इसलिए अबतक जिस रास्ते पर चलकर हम यहाँ तक पहुँचे हैं अब यों ही उसके आगे नहीं जा सकेंगे।

ग्रामदान और ग्रामस्वराज्य बहुत कुछ समान होते हुए भी ग्रामस्वराज्य में बहुत-कुछ नया है। ग्रामस्वराज्य में संगठन का प्रश्न है, शक्ति का प्रश्न है; उसमें केवल भावना का प्रश्न नहीं है, यद्यपि वह बुनियाद में है। नयेपन के कारण कार्यकर्ता और जनता किसीको भी ग्रामदान में से सहज रूप से ग्राम-स्वराज्य निकलता हुआ नहीं दिखाई देता। ग्रामस्वराज्य को नये सिरे से बताने की जरूरत है। अभी टीकमगढ़ में धीरेन् भाई गये थे। उन्होंने वहाँ यह महसूस किया कि नये सिरे से लोगों को ग्रामस्वराज्य का अर्थ बताने की जरूरत है।

सन् १९७२ अब कितनी दूर है? हममें से कई लोगों के मन में उसका अलग-अलग महत्त्व है। लेकिन विनोबाजी ने जो बात कही है वह हमारे दिमाग में रहनी चाहिए। उनके दिमाग में उसका क्या महत्त्व है? उन्होंने अनेक बार यह बात दुहराई है। उन्होंने कहा है कि सन् १९७२ में भी अगर हम इसी तरह रह जायेंगे तो इतिहास हमको 'राइट आव्' कर देगा।

सम्पूर्ण और समग्र क्रान्ति के लिए योग्य वाहक...?

बिहार का राज्यदान नहीं हुआ लेकिन पूरे उत्तर बिहार का हो गया। लगभग २ करोड़ की जनसंख्या है। उत्तर बिहार के सबके सब कार्यकर्ता तो दक्षिण बिहार में नहीं गये हैं। कार्यकर्ता चले भी जायँ तो जनता कहाँ जाती है? वह अपनी जगह मौजूद है। फिर क्या कारण है कि हम अपनी शक्ति का ऐसा संयोजन नहीं कर पाते कि उत्तर बिहार में जिलादान के बाद का काम शुरू होता और दक्षिण बिहार में प्राप्ति का काम जारी रहता? हमारे अन्दर समग्रता की कमी है जिसे जयप्रकाशजी बार-बार कहते हैं। हममें यह अभ्यास नहीं है कि एकसाथ हम एक से अधिक काम सँभाल सकें। प्राप्ति करेंगे तो प्राप्ति में ही रहेंगे; पुष्टि में लगेंगे तो पुष्टि ही करते रहेंगे। लेकिन यह हम कबतक कहते रहेंगे? अपनी शक्ति और संख्या का संयोजन इस तरह होना चाहिए कि हमारे हर मोर्चे एकसाथ चल सकें। हमारी यह क्रान्ति संपूर्ण और समग्र है, इसलिए अगर क्रान्तिकारी अपूर्ण और आंशिक रहेगा तो क्रान्ति का सफल वाहक नहीं बन सकेगा। और, अगर हम आज से ही तैयारी नहीं करते हैं तो जिलादान के बाद के काम की समय से शुरुआत नहीं हो सकेगी। राज्यदान होने और ग्रामस्वराज्य का काम शुरू होने के बीच जो खाली जगह रह जायेगी वह हमारे आंदोलन के लिए शायद घातक सिद्ध होगी। इसलिए यह सोचना चाहिए कि इस तरह का 'वैकुअम' (रिक्तता) आंदोलन में न पैदा होने पाये, तथा एक स्थिति से दूसरी स्थिति में सहज प्रवेश होता चला जाय। ग्रामसभाओं का संगठन बुनियादी काम है। हमारा आगे का महल ग्रामसभाओं के गठन के ऊपर निर्भर है। वह हमारे बुनियाद की ईंट है। कठिनाइयाँ बहुत हैं, लेकिन ग्रामसभाएँ बनानी हैं, और उन्हें सक्रिय करना है।

मालिक-महाजन के हृदय की धड़कन

ग्रामसभाओं के संगठन के सम्बन्ध में एक बात की ओर आप लोगों का ध्यान दिलाना चाहता हूँ। वह है मालिक और मजदूर का प्रश्न। एक नहीं, अनेक गाँवों में जाकर मालिकों और महाजनों से बातें करने का मौका मुझे मिला है। उन्होंने हस्ताक्षर किये हैं। बीघे में एक बिस्वा देने के लिए भी तैयार हुँ। लेकिन वे कहते हैं: 'आप हमें विश्वास दिलाते हैं कि हमारी गर्दन आपके हाथों नहीं कटेगी, लेकिन समाज को बदलने की वे ही सारी बातें कहते हैं जो साम्यवादी कहते हैं। तो यह समझाइए कि हमारी गर्दन कटे बिना समाज कैसे बदल जायेगा?' मालिकों और महाजनों के दिल में यह भय है जिसके कारण मालिक और महाजन का कदम ग्रामसभा के संगठन में नहीं उठता। अनुभव बता रहा है कि उनके कदम के उठे बिना ग्रामसभाएँ बनती नहीं, और बन भी जायँ तो चलती नहीं, और आज की सरकारों की तरह चल भी गयीं तो टिकती नहीं। यह सब समस्या है और अपना 'कनवर्सन' का तरीका है। आखिर हम कहते हैं कि हृदय को बदल रहे हैं। हमारे आलोचक कहते हैं कि सामूहिक रूप से मालिकों और महाजनों के पास कोई हृदय होता ही नहीं। फिर भी हमने साहस करके उनके अन्दर हृदय 'ट्रांसप्लांट' किया है। हम मानकर चलते हैं कि मनुष्य मनुष्य है, लेकिन समाज की व्यवस्था ने उसे शोषक-शोषित बना दिया है। यह बात हमने कही है। लेकिन हम देखते हैं कि हमारी बातें सुन-सुनकर उनके दिल और दिमाग में दूसरी धड़कन पैदा हो जाती है। वह धड़कन है भय की। इसलिए मैं मानता हूँ कि हमारी क्रान्ति का जो वादा है महाजन और मालिक को अभयदान देने का, उसका व्यावहारिक स्वरूप निकालना चाहिए, और बड़े पैमाने पर। मालिकों और महाजनों को मालूम होना चाहिए कि उनकी पूँजी सुरक्षित भी रह सकती है, और समाजोपयोगी भी हो सकती है, और उनकी जान के लिए कोई खतरा नहीं है, बल्कि उनकी प्रतिभा के लिए हमारे आन्दोलन में स्थान है। अगर वे मनमाना शोषण छोड़ दें तो पूँजी की प्रतिष्ठा और उसका उचित लाभ उन्हें मिल सकता है। यह इस आन्दोलन का अभयदान है, किन्तु यह दान हमने दिया नहीं है। यह बात जल्दी की है। इसे किये बिना हमारा कदम आगे नहीं बढ़ेगा, ऐसा मेरा निश्चित मत है।

दूसरी चीज। ग्रामसभा का गठन शुरू करते ही गाँव की तमाम समस्याएँ खड़ी हो जाती हैं। वह जो दबा हुआ आदमी है, वाचाल हो जाता है। वह कुछ कहने लगता है, कुछ माँगने और चाहने लगता है। यह सब होता है। हम यह भी देखते हैं कि गाँव के अन्दर अपनी समस्याओं को हल करने की शक्ति नहीं रह गयी है। गाँव अन्दर से बिलकुल खोखले हो गये हैं। गाँव

के धरातल पर गाँव की समस्याओं का समाधान होता दिखाई ही नहीं देता। उस धरातल को बदलने की जरूरत है। गाँव के बाहर की शक्तियों को जोड़कर गाँव की समस्याओं को 'सबलीमेट' करने की जरूरत है। गाँव के सवालों का धरातल बदलेगा, और उस बदले हुए धरातल पर उनका समाधान निकलेगा, यह एक प्रश्न है जिस पर विचार करना चाहिए।

हमारे सामने सन् १९७२ है। सन् १९७२ को आन्दोलन के संदर्भ में समाज के सामने प्रस्तुत करना चाहिए। मतदाताओं के सामने सारी बातें खुलकर जानी चाहिए। आज का मतदाता इस देश के भविष्य का विधाता है। उसके हाथ में इसके बनाने और बिगाड़ने की शक्ति है। सन् १९७२ के लिए उसे आज से तैयार करना चाहिए। हम यह महसूस करते हैं कि पुराने नारों से जनसमुदाय प्रेरित होता नहीं है। लोकनीति एकमात्र ऐसा नारा है जिसकी झलक लोगों की आँखों में रोशनी पैदा कर देती है। इस लोकनीति से आज की राजनीति बदल जायेगी, अर्थनीति बदल जायेगी और शिक्षानीति बदल जायेगी। जब वे समझ जाते हैं कि लोकनीति से यह सब सम्भव है तो उनके चेहरे पर आशा का प्रकाश छा जाता है।

ग्रामस्वराज्य के लिए सुनियोजित अभिक्रम

लोकनीति से किस तरह ग्रामस्वराज्य की रचना हो सकती है इसकी रूपरेखा एक गोष्ठी में तैयार हुई थी। उस गोष्ठी के आधार पर एक छोटी-सी पुस्तिका बनायी गयी है—'ग्रामस्वराज्य'। यह पुस्तिका एक-एक गाँव में पहुँचनी चाहिए और एक-एक कार्यकर्ता को उसकी बातें नमाज की तरह रट जानी चाहिए। हम कुरान पढ़ सकें या नहीं, लेकिन नमाज तो याद होनी ही चाहिए। उतने से अपना बहुत काम बनता है। व्यावहारिक ब्रह्मविद्या ग्रामदान से शुरू होती है और ग्रामस्वराज्य से पूरी होती है। उसकी पूरी रूपरेखा इस छोटी-सी पुस्तिका में मौजूद है। हमने इसमें सुझाया है कि जिस तरह से ग्रामदान की प्राप्ति का अभियान चलता है उसी तरह अब विचार-शिक्षण का अभियान चलना चाहिए। हर शिविर में इस पुस्तिका को 'टेक्स्टबुक' के रूप में रखना चाहिए। इसमें दो चीजें मुख्य हैं। आज जो हम पहले कदम के तौर पर योजना पेश करना चाहते हैं उसके दो छोर हैं—एक छोर पर 'स्वायत्त ग्रामसभा' (अटानोमस विलेज असेम्बली), है और दूसरे छोर पर 'दलमुक्त राज्यव्यवस्था' (पार्टीलेस एडमिनिस्ट्रेशन) है। दूसरे शब्दों में यह सरकारमुक्त गाँव, और दलमुक्त सरकार की योजना है। ये दोनों कैसे प्राप्त किये जा सकते हैं इसकी योजना होनी चाहिए। आदरणीय गोराजी को बहुत चिन्ता थी कि हमारी एक राजनीति बननी चाहिए। बहुत दिनों से वह कहते आये हैं। राजनीति तो बनी हुई है। हमारी तो लोकनीति बननी चाहिए दलमुक्ति की। वह इस पुस्तिका में मौजूद है। केवल कार्यकर्ताओं के ही नहीं, बल्कि नागरिकों के शिविरों में, इस पुस्तिका का अभ्यास होना चाहिए। इस तरह की शुरुआत बिहार में हुई है। मुजफ्फरपुर के वैशाली स्थान में सबसे पहले यह शिविर हुआ। पूर्णिया में मई महीने में होगा, सारन में होगा, सहरसा जिले में होगा। इस तरह एक के बाद दूसरे जिले करते चले जायेंगे।

विकास और रचना का नया आयाम

एक प्रश्न विकास का आता है। हमारे अनेक मित्रों के मन में सवाल उठता है कि आखिर विकास का क्या होगा। जहाँ तक नमूने बनाने का सवाल है जयप्रकाशजी ने आबूरोड के सम्मेलन में उसका आखिरी जवाब दे दिया था कि नमूने बनाने का काम हमारा नहीं है। नमूने को हम खिलौना समझते हैं। हम खिलौने बनाने नहीं निकले हैं। हम तो समाज बनाने की बात कहते हैं और समाज बनाने का काम करते हैं। कम-से-कम दिल में समाज-परिवर्तन का सपना रखते हैं। हमारा काम है विकास की मूल शक्ति पैदा करने का। सोचिए, अगर आज की राजनीति चलती रह गयी, तो क्या समाज की रचनात्मक शक्ति प्रकट होगी? अगर लोकनीति नहीं आयी तो क्या लोकविकास सम्भव होगा? सरकारी अधिकारी अच्छी तरह जानते हैं और कहते हैं कि राजनीति नहीं बदलती है तो किसी प्रकार का विकास सम्भव नहीं है। रचनात्मक कार्यों का इतिहास क्या बताता है? सरकार की विकास-योजना का इतिहास क्या बताता है? उस इतिहास को दुहराने की जरूरत नहीं है। इसलिए लोकनीति से लोकशक्ति बनती है तो विकास के लिए जितना आधार आवश्यक है वह बन जाता है। अनेक क्षेत्र हैं जहाँ विकास के काम हो रहे हैं। लेकिन हम इतना ही मान सकते हैं कि विकास के कुछ छोटे ही काम हुए हैं। विकास का कोई नया आयाम हमारे हाथ आया नहीं है, इस कारण कि राजनीति के क्षेत्र में अभी हमारी 'डायनेमिक्स' चली नहीं; शुरू ही नहीं हुई।

यह तब चलेगी जब लोकनीति के विचार के अनुसार सन् १९७२ में हम वोटरों से यह कह सकेंगे कि वोट पार्टी के उम्मीदवार को नहीं देना है बल्कि अपने उम्मीदवार को खड़ा करना है। अभी मध्यावधि चुनाव में हमने कहा कि वोट अच्छे उम्मीदवार को देना है; सन् १९७२ में हम कहेंगे कि अपना उम्मीदवार खड़ा करना है। अपने उम्मीदवार का अर्थ क्या है? इलेक्टोरेल कालेज कैसे बनेंगे, निर्वाचन-मण्डल कैसे बनेंगे, ये सारी बातें 'ग्रामस्वराज्य' पुस्तिका में लिखी हुई हैं।

जिलादान के बाद जिलादानी क्षेत्रों में एक नया अभियान चलना चाहिए। जिस तीव्रता के साथ प्राप्ति का अभियान चलता है उसी प्रकार नागरिकों के ग्राम-स्वराज्य शिविरों का अभियान चलना चाहिए। त्रिविध कार्यक्रम के कुछ सघन प्रयोग-क्षेत्र लेने चाहिए। अभी कोई प्रयोग हमने नहीं किये। लोकनीति की दिशा में तो कोई प्रयोग हुए ही नहीं। हमें यह मालूम नहीं है कि जनता ग्रामस्वराज्य के लिए कहाँ तक जायगी। यह जाने बिना आगे का काम कैसे होगा? बिहार में प्रयोग-क्षेत्र बनाने का काम शुरू हुआ है। हर एक सघन क्षेत्र में अपना एक मुख्य साथी जो समाज को प्रभावित कर सके, बैठे। अगर वह संस्था का कार्यकर्ता है तो संस्था उसको वेतन दे, लेकिन वह संस्था की रोजमर्रा की जिम्मेदारी से मुक्त हो। ऐसा मुख्य मित्र अपने

www.vinoba.in

प्रयोग-क्षेत्र में ग्रामसभा का संगठन, लोकनीति के लिए आवश्यक लोक-शिक्षण, तरुण शांति-सेना, ग्राम-शांतिसेना, साहित्य-प्रचार वगैरह के काम में शक्ति लगाये। खादी के काम की कोई दिशा हमें अभी तक स्पष्ट नहीं हुई है, या यों कहिए कि दिशा तो स्पष्ट है लेकिन कहाँ से शुरू करें और कैसे आगे बढ़ें यह साफ नहीं है। बावजूद बहुत सिर मारने के कोई चीज हाथ नहीं आयी है, लेकिन आनी चाहिए। पुरानी खादी चलती नहीं। वह खुद ही नहीं चलती तो दूसरे को क्या चलायेगी? नयी खादी, गाँव की खादी, कैसे खड़ी होगी, कहाँ से यंत्र आयेंगे, कहाँ से साधन आयेंगे, यह सारा सवाल अनिर्णित है। यह भी दिखाई देता है कि इस सवाल का जवाब विद्वान और विशेषज्ञ नहीं दे सकेंगे। शायद सारे अनुत्तरित प्रश्नों का उत्तर अन्त में जनता ही देती है, लेकिन अपने ढंग से देती है। इसलिए जनता के हाथों में खादी को सौंपकर संतोष मानना होगा। इसलिए 'प्रयोग-क्षेत्र' हर जिलादानी क्षेत्र में चुने जाने चाहिए।

समर्पित कार्यकर्ताओं का 'कैडर'

इस सारे काम के लिए कार्यकर्ताओं का एक 'कैडर' तैयार होना चाहिए। अभी तो हमारे खिचड़ी कार्यकर्ता हैं जो सब बहुधन्धी हैं। आगे का काम इतना कठिन है कि उसमें ऐसे कार्यकर्ताओं की जरूरत है जो उसके लिए 'कमिटेड' हों, उनके सामने इस आन्दोलन के सिवाय और कुछ न हो। ऐसे समर्पित कार्यकर्ताओं का एक 'कैडर' बनाना चाहिए। यह कैसे बनेगा, इस पर विचार करने की जरूरत है।

शहरों के काम की तरफ बहन निर्मला ने ध्यान दिलाया है। वह आवश्यक है। ग्रामस्वराज्य के सन्दर्भ में वह टाला नहीं जा सकता है। शहरों को छोड़कर आगे बढ़ना खतरे से खाली नहीं है। वे हमारा रास्ता रोक सकते हैं, समाज की चिन्तनधारा को बदल सकते हैं और बहुत दिनों तक भारत को भटका सकते हैं। इसलिए अब उनको अपने वृत्त के अन्दर लाना चाहिए, पहुँच के अन्दर लाना चाहिए, और उनके काम की बात सोचनी चाहिए।

साहित्य हमारी लड़ाई की बन्दूक है। गाँव-गाँव साहित्य पहुँचना चाहिए। गाँव के साथ सम्बन्ध जोड़ने का दूसरा कोई माध्यम नहीं है। कोई कारण नहीं है कि 'गाँव की बात' पत्रिका हर गाँव में न पहुँचे। अगर गाँव की बात गाँव में नहीं पहुँचेगी तो शहरों की बात पहुँचेगी। आप उसको पहुँचने से रोक नहीं सकेंगे। और शहर की बात पहुँच गयी तो ग्राम-स्वराज्य साफ हो जायेगा। कम-से-कम हमारे लिए ग्रामस्वराज्य नहीं रह जायेगा।

अन्तिम बात कि कार्यकर्ता भले ही अपनी जीविका के लिए संस्था-आधारित हो, लेकिन हमारे नये प्रयोग-क्षेत्रों में संगठन और शिक्षण का सब काम जनाधारित होने चाहिए। कार्य वहाँ की जनता के निर्णय से, कर्ता भी वहाँ के, और कोष भी वहाँ का ही। इस तरह कार्य, कर्ता और कोष की एक त्रयी इन प्रयोग-क्षेत्रों में बने तो उसका जो परिणाम आयेगा, उससे ग्रामस्वराज्य की शक्ति बनेगी। लोकनीति के लिए रास्ता खुलेगा। लोकशक्ति ही लोकक्रान्ति की आत्मा है।

सर्व सेवा संघ-अधिवेशन, तिरुपति में दिनांक २४-४-'६० को दिया गया भाषण।

अर्थ की समस्या और माँगने के अनुभव

[अर्थ-संग्रह के काम का यह अनुभव इस बात का संकेत है कि अब हमें शहरों की ओर से उदासीन नहीं रहना चाहिए। परिस्थिति और उसके अनुसार की गयी आन्दोलन की व्यूह-रचना के कारण अब तक हम गाँवों की सीमा में ही काम करते रहे, लेकिन अब हमें अपनी आवाज शहरों तक पहुँचानी होगी, इसके साथ ही नीचे की इकाई के ठोस संगठन पर भी अपेक्षाकृत अधिक ध्यान देना होगा। —सं०]

गत दिनांक २३ से २५ अप्रैल तक मद्रास के पास तिरुपति, आन्ध्र में आयोजित सर्व सेवा संघ के अधिवेशन के बाद मद्रास शहर के राजस्थानी लोगों में सर्वोदय-कार्य के लिए चंदा करने के लिए श्री गोकुलभाई भट्ट, तथा श्री बिरधीचंदजी चौधरी के साथ मैं लगभग १० दिन मद्रास रहा। सर्व सेवा संघ के नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री जगन्नाथनजी का बहुत दिनों से आग्रह था कि तमिलनाडु के सर्वोदय-काम के लिए मद्रास शहर के राजस्थानी भाइयों से सहायता प्राप्त करने में हम लोग मदद करें। राजस्थान-प्रदेशदान के काम के लिए भी अर्थ-संग्रह बहुत जरूरी हो गया है। मद्रास के राजस्थानी समाज से जो सहायता एकत्र हो रही है उसमें से छठा हिस्सा सर्व सेवा संघ को देने के बाद आधी रकम का उपयोग तमिलनाडु के लिए और आधी का राजस्थान के लिए करने का निश्चय किया है।

ग्रामदान-आन्दोलन का काम गाँवों में सीमित है और उसके लिए अर्थ-संग्रह शहरों से करना पड़ता है, जहाँ ग्रामदान के काम की जानकारी लोगों को नहीं के बराबर है। व्यापारी समाज तो इन गतिविधियों से और भी अछूता है। अतः चंदे के काम में काफी कठिनाई होती है। वैसे भी माँगने का काम बहुत कठिन है। समाज में भोग और स्वार्थ की प्रवृत्ति बढ़ते जाने के कारण दान और त्याग की भावना भी दिनों-दिन कम हो रही है। दूसरी ओर आजकल सार्वजनिक कामों के नाम पर, और राजनैतिक पार्टियों के द्वारा काफी चंदे होने लगे हैं, और इनमें से कुछ का दुरुपयोग भी होता है, अतः यह काम और भी दूभर हो गया है। बहुत सुनना पड़ता है। देने वाले तो सभी को एक नजर से देखते हैं। यह उनके लिये स्वाभाविक भी है। इन सब कारणों से इस काम में कभी-कभी बड़ी ग्लानि होती है, लेकिन और कोई चारा भी नजर नहीं आता, क्योंकि जल्दी-से-जल्दी गाँव-गाँव में आन्दोलन को पहुँचाने के लिए काफी बड़े पैमाने पर अर्थ-व्यवस्था करना भी जरूरी हो गया है. जो केवल स्थानीय सूत्रों से सम्भव नहीं है। उधर देश में परिस्थिति इतनी तेजी से बिगड़ रही है कि नीचे से समाज संगठित नहीं हुआ और उसमें शक्ति नहीं आयी तो विनाश को रोकना सम्भव नहीं है। अभी भी शायद काफी देर हो चुकी है।

(श्री सिद्धराज ढड्ढा की चिट्ठी से)

तरुण शान्ति-सेना

क्या तरुणों की इस बात पर ध्यान दिया जायेगा ?

[हमें यह घोषणा करते हुए खुशी हो रही है कि 'भूदान-यज्ञ' में 'तरुण शान्ति-सेना' का एक पाक्षिक स्तम्भ इस अंक से शुरू कर रहे हैं। इस स्तम्भ का शुभारम्भ बम्बई में पिछले दिनों आयोजित तरुण शान्ति-सेना के पहले अधिवेशन द्वारा स्वीकृत घोषणा-पत्र तथा उसमें भाग लेनेवाले उत्साही और सक्रिय तरुण शान्ति-सेवक अभय बंग की अभिव्यक्तियों द्वारा हो रहा है। हम कोशिश करेंगे कि इस स्तम्भ में हम अपनी ओर से विश्व की युवा-चेतना, उसकी अकुलाहट और अन्वेषणों की जानकारी तरुणों के लिए प्रस्तुत करें। हमारी अपेक्षा होगी तरुण पाठकों, शान्ति-सैनिकों, सेवकों से कि वे इस स्तम्भ को अपना मानें, और इसे तरुणों की बिखरी शक्ति को सूत्रबद्ध करने का एक माध्यम बनायें।

अभय बंग स्वयं सर्वोदय-क्रान्ति के लिए समर्पित परिवार की देन है, और इस लेख द्वारा उसने सर्वोदय-परिवार के लड़के-लड़कियों से जो अपील की है, वह महत्त्वपूर्ण है। क्या हम आशा करें कि देशभर में फैले हजारों कार्यकर्ताओं के लड़के-लड़कियाँ अभय की पुकार को सुनेंगे और तरुणों की 'उफनती शक्ति को विधायक दिशा' देने के काम में सक्रिय होंगे ? —सम्पादक]

तरुण शान्ति-सेना का आठवाँ अखिल भारतीय शिविर और प्रथम सम्मेलन हाल ही में बम्बई में सम्पन्न हुआ। भारतभर के करीब २०० तरुणों ने शिविर में ११ मई से २५ मई तक भाग लिया। सब साथ रहे, साथ श्रमदान किया, साथ चर्चाएँ कीं। वहाँ से लौटने के बाद कुछ विचार, कुछ सुझाव मन में आते हैं। उन्हें एक तरुण शान्ति-सेवक के नाते साथियों और गुरुजनों के सामने रखना चाहता हूँ।

बिहार के अकाल में तरुणों ने जो अद्भुत सेवा-कार्य किया उससे प्रभावित होकर जयप्रकाशजी ने तरुणों की शक्ति का विधायक कार्य के लिए उपयोग हो, इसलिए तरुण शान्ति-सेना की स्थापना की। पुराना किशोर शान्ति-दल इसमें विलीन कर दिया गया। उसके बाद तरुण शान्ति-सेना के अनेक शिविर हुए हैं, और संगठन कुछ आगे बढ़ा है। लेकिन जिस धीमी गति से और ढीले तरीके से वह आगे बढ़ रहा है, उस बारे में हम तरुणों को गहरा असन्तोष है।

आज सारी दुनिया में, तरुणों में हलचल और जागृति है। क्रान्ति की ओर वे अग्रसर हो रहे हैं। वे समाज में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन करने की माँग कर रहे हैं, और क्रान्तियों में सक्रिय भाग ले रहे हैं।

भारत के तरुणों में भी वर्तमान परिस्थिति के प्रति गहरा असन्तोष है। लेकिन आज वे व्यापक दृष्टि से नहीं सोच रहे हैं, वे या तो संकुचित दायरों में रहकर हड़ताल या दूसरी हरकतें कर रहे हैं, या फिर किसी राजनीतिक पक्ष के हाथों के खिलौने बन रहे हैं। उनकी अपार शक्ति व्यर्थ जा रही है, या विनाशकारी हो रही है।

तरुण शान्ति-सेना इन सब तरुणों की उफनती हुई शक्ति के लिए सुनियोजित कार्य-क्षेत्र और तरुणों को अपना एक मंच देना चाहती है। यह शक्ति व्यापक पैमाने पर क्रान्ति के लिए, समाज से विविध प्रकार के घातक जहर हटाने के लिए और विधायक कार्य के लिए सक्रियता से लगे, यह तरुण शान्ति-सेना का उद्देश्य है।

इस विशाल उद्देश्य तक पहुँचने के लिए जो महत्त्व तरुण शान्ति-सेना को दिया जाना चाहिए था, जो शक्ति उस पर केन्द्रित की जानी चाहिए थी, दुर्भाग्य से वह नहीं हो रहा है, ऐसा लगता है।

तरुण शान्ति-सेना के दो अखिल भारतीय शिविर हर साल हो रहे हैं। भारत भर के दो-तीन सौ तरुण इन शिविरों में हर साल आते हैं, १५ दिन साथ रहते हैं, प्रेरणा लेते हैं; लेकिन शिविर खतम होने के बाद ये मोती फिर से बिखर-से जाते हैं। एक सूत्र में पिरोकर उनकी माला नहीं बनायी जाती। आज तरुण शान्ति-सेना के सिर्फ ३५० सदस्य (तरुण शान्ति-सेवक) हैं। शान्ति-सेना मण्डल की ओर से बीच-बीच में भेजे जाने वाले पत्रों के सिवाय उनसे भी दूसरा कोई सम्पर्क करता नहीं है। कोई संगठित स्वरूप उनका नहीं है। किसी ठोस कार्यक्रम की कोई स्पष्ट कल्पना उनके सामने नहीं है। सब अकेले-अकेले बिखरे हुए हैं।

इसलिए यह सुझाव देना चाहता हूँ कि :

१. तरुण शान्ति-सेवकों की संख्या बहुत बढ़ायी जाय, करीब एक लाख तक, ताकि व्यापक परिणाम हो। सर्वोदय-कार्यकर्ता अपने लड़के-लड़कियों को इस ओर मोड़ें।

२. तरुण शान्ति-सेना के संगठन की जानकारी का प्रचार और प्रसार किया जाय। अधिकांश तरुणों को इसकी जानकारी तक नहीं है। हर विद्यापीठ, कालेज में इसकी शाखाएँ बनें।

३. इन तरुण शान्ति-सेवकों को बाँध रखनेवाला कोई तत्त्व हो। आज हमारी कोई 'सेना' है, ऐसा हमें महसूस नहीं होता। इसलिए अकेलेपन महसूस होता है, और शक्ति का भान नहीं होता।

४. शिविर तथा सम्मेलनों में व्याख्यान, चर्चाएँ, विचारों की सफाई बहुत अच्छी और भरपूर होती है। प्रस्ताव पास किये जाते हैं। लेकिन इन विचारों को, प्रस्तावों को प्रत्यक्ष कार्यान्वित करने का कोई उत्साहवर्धक कार्यक्रम आगे के लिए न दिया जाता है, न सुझाया जाता है। और काम के बिना विचार टिक नहीं सकते। बिहार का शिविर अत्यन्त उत्साहवर्धक हुआ, क्योंकि अकाल-पीड़ितों की सेवा का काम था। बम्बई के शिविरों में भी 'स्लम' (झोपड़-पट्टी) में गंदी नाली और रास्ते आदि को बाँधने का श्रमदानवाला हिस्सा ही सबसे ज्यादा रुचिकर और प्रेरणादायी था। प्रत्यक्ष काम करने में तरुण हमेशा आगे रहते हैं, इसलिए ऐसे कुछ कार्यक्रमों से संगठन आकर्षक, प्रेरणादायी और महत्त्व का होगा। लेकिन आज हमारे पास, अपनी-अपनी जगह करने के लिए ऐसा, या दूसरा कोई विधायक कार्यक्रम, जो साधारण तरुणों को भी खींच लायेगा, प्रेरणा देगा, नहीं है।

कोई ऐसा सर्वमान्य कार्यक्रम नहीं है, जो सारी सेना पूरे राष्ट्र में अपनी-अपनी जगह कर रही हो। ऐसा कार्यक्रम दिया जायेगा, तभी तरुण शान्ति-सेना को कोई आकर्षक, ठोस स्वरूप मिल पायेगा। तभी तरुणों को इस संगठन की ओर आकर्षित करना और उनकी संख्या बढ़ाना भी शक्य होगा। और आज के स्वरूप की जगह, जो कि सिर्फ शिविर के रूप में है, सेना का नया स्वरूप विकसित होगा।

५. तरुण शान्ति-सेना में अनुशासन हो, जो दुर्भाग्य से आज नहीं है। इस बारे में एन० सी० सी० या आर० एस० एस०, इन संगठनों से हम सीख सकते हैं।

शिविर तथा सम्मेलनों में 'प्रत्यक्ष क्या कार्यक्रम हो', इसे छोड़कर सब विषयों पर चर्चा होती है। कई बार इस पर विचार हुआ तो अधूरा हुआ, उस पर भी कार्यान्वयन नहीं हुआ। इसलिए हाथ कुछ भी नहीं आता।

शिविर से लौटने के बाद अपनी जगह पर तरुण शान्ति-सेना का केन्द्र स्थापित, करना, दस-पाँच मित्र जमा करना, हफ्ते में नियोजित दिन केन्द्र पर एकत्रित होकर प्रार्थना, चर्चा करना, ज्यादा-से-ज्यादा किसी देहात में जाकर सफाई करना, इससे ज्यादा कुछ नहीं होता। धीरे-धीरे हवा निकल जाती है, हम ठंढे पड़ जाते हैं। आज की विस्फोटक परिस्थिति में अगर हम इतने पर ही समाधान मान लें और कोई क्रान्तिकारी, ठोस कदम न उठायें, तो समय हमारे हाथों से निकल जायेगा।

इसलिए तरुणों को आकर्षक लगे, ऐसा विधायक ठोस कार्यक्रम दिया जाना चाहिए, जो पूरे राष्ट्र में तरुण शान्ति-सेवक अपनी-अपनी जगह करें। इसके सिवा हरेक केन्द्र अपनी स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार दूसरे कार्य भी करें। तरुण शान्ति-सेना के आज के बिखरे हुए, बिना चेहरे के स्वरूप की जगह उसे अनुशासित, लेकिन लचीला, व्यापक और एक-दूसरे से सम्बन्धित संगठन का स्वरूप दिया जाय।

तरुणों में जो अपार शक्ति है, उसका भान अभी शायद सर्वोदय-समाज को नहीं हुआ है, नहीं तो तरुण शान्ति-सेना पर इतना कम जोर नहीं दिया जाता। बम्बई के शिविर में प्रशिक्षकों की संख्या अत्यन्त कम थी, इसलिए संचालकों की ओर से शिविर पर आवश्यक शक्ति नहीं लगायी जा सकी। पहले ही शान्ति-सेना पर सर्वोदय-जगत् की बहुत कम शक्ति लगती रही है, और उसका भी सिर्फ कुछ ही हिस्सा तरुण शान्ति-सेना को मिल पाता है। तरुण शान्ति-सेना के कार्य का स्वरूप विधायक हो, यह अपेक्षित है। इसलिए तरुण शान्ति-सेना पर अधिक शक्ति लगाना अत्यन्त आवश्यक है। वरना तरुण, जो आज गांधी-विचार और विधायक कार्य से दूर खिसकता जा रहा है, कहीं-का-कहीं भटक जायेगा।

अगर हम शीघ्र ही तरुणों का विशाल संगठन बना पाये, तो ग्रामदान की पुष्टि और निर्माण के कार्य का भार वृद्धों के थके हुए कन्धों पर से हम तरुण जरूर अपने कन्धों पर उठा लेंगे। सर्वोदय-कार्यकर्ताओं के लड़के-लड़कियाँ भी इसके द्वारा आन्दोलन में भाग ले सकेंगे। पूरे राष्ट्र में एक विधायक निर्माण करनेवाली शक्ति पैदा होगी।

इसलिए तरुण शान्ति-सेना को खूब बढ़ाना चाहिए, सुसंगठित करना चाहिए। अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद एक साल इस कार्य को देने के लिए तरुणों को प्रेरित करना चाहिए, और इन सबकी शक्ति का पूरा उपयोग कर लेना चाहिए।

बरसात के पानी का कोई योग्य उपयोग न करें, तो वह बह जायेगा, बाढ़ की शामत लायेगा या सूख जायेगा।

क्या तरुणों की इस बात पर ध्यान दिया जायगा ?

—अभय बंग

मेडिकल कालेज, नागपुर

बम्बई-सम्मेलन में स्वीकृत :

तरुण शान्ति-सेना का घोषणा-पत्र : क्रान्ति की अवधारणा में क्रान्ति

तरुण शान्ति-सेना के प्रथम राष्ट्रीय सम्मेलन में एकत्रित हम भारत के युवक और युवतियाँ यह अनुभव करते हैं कि आज मानव जाति एक ऐसे संकट-काल से गुजर रही है, जैसा अबतक के लम्बे इतिहास में पहले कभी नहीं उपस्थित हुआ था। विज्ञान और प्राद्यौगिकी ने दुनिया को मानव-पक्षियों का एक छोटा घोंसला-सा बना दिया है और उसकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करने के साधन भी जुटा दिये हैं। यह एक विचित्र विरोधाभास है कि देश में उपभोग के सामानों की प्रचुर मात्रा मौजूद होने के बावजूद भी लोग घोर गरीबी की जिन्दगी बिता रहे हैं ! एक तरफ ऐसा जमाना है कि आदमी चाँद तक पहुँच सकता है, लेकिन वह अपने पड़ोसी के दिल तक पहुँचने में नाकाबिल साबित हो रहा है ! चिकित्सा-विज्ञान के क्षेत्र में अभूतपूर्व विकास कर लेने के बावजूद आदमी बीमारियों का शिकार हो रहा है। मनोविज्ञान और समाजशास्त्र ने बहुत प्रगति की है, लेकिन इनसान दिमागी बीमारियों और सामाजिक कुव्यवस्था को भुगतने के लिए मजबूर है।

हम भारत के युवा इस विरोधाभास के मूक और बेबस दर्शक मात्र होने के लिए कतई तैयार नहीं हैं। हम यह जानते हैं कि युवा लोगों को यह हक हासिल है कि वे इस परिस्थिति और व्यवस्था के खिलाफ बगावत करें और इसे बदलने की क्रान्ति में शामिल हों।

हमें विश्वास है कि क्रान्ति लाने के सिर्फ दो ही रास्ते हैं—हिंसक और अहिंसक। हिंसक क्रान्ति के नारे के प्रभाव में पड़ने से हम दृढ़ता के साथ इनकार करते हैं। यद्यपि देखने में हिंसक क्रान्तियाँ तेजगतिवाली मालूम देती रही हैं, लेकिन उन्होंने अंत में उन आदर्शों को ही मिट्टी में मिला दिया, जिनको प्रतिष्ठित करने के लिए वे शुरू हुई थीं। हिंसक क्रान्तियों ने संगठित हिंसक शक्तियों को तो शक्तिशाली बनाया, लेकिन दुर्बलों और दलितों का हाथ मजबूत नहीं किया। इन क्रान्तियों ने एक प्रकार का परिवर्तन लाने में

www.vinoba.in

जरूर सफलता पायी, लेकिन इसके साथ ही इन्होंने एक ऐसी परिस्थिति पैदा कर दी, जिसमें उन लक्ष्यों की ही पराजय हो गयी, जिन्हें हासिल करने के लिए क्रान्तियाँ शुरू हुई थीं।

इसीलिए अब अहिंसक क्रान्ति ही एक-मात्र विकल्प है। यद्यपि महात्मा गांधी और मार्टिन लूथर किंग जैसे व्यक्तियों के अहिंसा की शक्ति का शोध करनेवाले प्रयोगों में मानव को कुछ अनुभव मिल चुका है, फिर भी जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में इसे अपनी सामर्थ्य सिद्ध करना बाकी है। अहिंसा की सामर्थ्य को सिद्ध करना आज की सबसे बड़ी चुनौती है। हम भारत के युवागण इस चुनौती को स्वीकार करने के लिए तैयार हैं, और ऐसा करते हुए हम क्रान्ति की धारणा में ही क्रान्तिकारी परिवर्तन लाना चाहते हैं।

हम विश्वास करते हैं कि युवकों को न केवल क्रान्ति की कामना करने का हक है, बल्कि क्रान्ति करने का दायित्व निभाना है। उस दायित्व के निभाने के लिए पहला कदम उठाने की दृष्टि से हम नीचे लिखा कार्यक्रम तय करते हैं :

• यह मानते हुए कि व्यक्ति और समाज अन्योन्याश्रित और अविभाज्य है, हम अपनी जिन्दगी में क्रान्ति लाने का प्रयास करेंगे। हम जमाने की निष्ठुरता के आगे नहीं झुकेंगे और न तो हम अपने को उसका एकदम विरोधी मानेंगे। हम चाहेंगे कि जमाने की बुद्धिमत्ता और अनुभव का युवा-शक्ति और दूरदृष्टि के साथ मेल बैठे।

• हम जातिवाद, क्षेत्रवाद, सम्प्रदायवाद, प्रदेशवाद, भाषावाद और उत्कृष्ट देश-प्रेम आदि, उन सब वृत्तियों को अस्वीकार करते हैं, जो आदमी और आदमी के बीच अलगाव पैदा करती हैं और उनसे युद्ध ठानने को तत्पर हैं।

• हम भ्रष्टाचार के किसी काम में भागीदार नहीं बनेंगे और दूसरे भ्रष्ट आचरण करेंगे तो उसे सहन भी नहीं करेंगे।

• हममें से जो छात्र हैं, वे परीक्षाकाल में चलनेवाले दुराचार में शरीक नहीं होंगे और अन्य छात्रों को इस प्रकार के दुराचार से विरत करने के लिए उन्हें ऐसे दुराचार के खिलाफ संगठित करेंगे। हम अपने साथी छात्रों को इस बात का यकीन करायेंगे कि शिक्षा का बुनियादी उद्देश्य शरीर और बुद्धि का प्रशिक्षण और चरित्र-निर्माण है, सिर्फ परीक्षा पास करना नहीं।

• हम भारत की परिस्थिति को बदलने, असमानता और अन्याय की जंजीरों को तोड़ने, और समाज के विक्षुब्ध लोगों तक पहुँचने का माध्यम बनाने का प्रयास करेंगे।

आज की शिक्षा जिन्दगी से दूर है। हम इस शिक्षा-पद्धति को बदलेंगे। विज्ञान के क्षेत्र में हमारी शिक्षा-पद्धति जमाने से बहुत पिछड़ी हुई है। यह जिन्दगी को वैज्ञानिक दृष्टिकोण देने में असफल है। साहित्य और ललित कला के क्षेत्र में यह शिक्षा-पद्धति ऐसे चरित्र के लोगों का जनपुंज तैयार करती है, जिनमें न गहराई होती है और न आत्म-सम्मान। शैक्षिक-प्रशासन ऊपर से लेकर नीचे तक असंतोषजनक है। शैक्षिक-प्रशासन में हम छात्रों की सक्रिय और उत्तरदायित्व-पूर्ण भागीदारी चाहते हैं। हम पुराने जमाने की तस्वीर के अनुसार अपना निर्माण नहीं करना चाहते। हम एक नयी और बेहतरीन दुनिया बनाना चाहते हैं। हम गलतियाँ कर सकते हैं, लेकिन हम अपनी जिम्मेदारी नहीं छोड़ेंगे। हम सिर्फ इतना ही चाहते हैं कि पहले के लोगों के लिए हमें दोषी न ठहराया जाय।

आर्थिक और सामाजिक क्षेत्र में हम एक अहिंसक क्रांति लाने का प्रयास करेंगे। आनेवाले कल की बेहतरीन दुनिया को आगे लाने में इन क्षेत्रों का बुनियादी महत्त्व है। हम इस बात को साफ कर देना चाहते हैं कि आर्थिक समानता और सामाजिक न्याय हमारे लक्ष्य हैं। क्रान्ति की हमारी पद्धति हमारे इन उद्देश्यों के अनुरूप होगी। हम भूमिहीन को जमीन दिलाने, बेरोजगार को काम दिलाने, बेघर को मकान दिलाने और शक्ति-हीनों में शक्ति-संचार करने का प्रयास करेंगे।

राजनीतिक पक्ष हमारा शोषण करने की कोशिश करते हैं। हम इसका विरोध करेंगे। हम राजनीति से पलायन नहीं करना चाहते, लेकिन हम पक्षपात की राजनीति में भी नहीं शामिल होना चाहते। वस्तुतः हम आज की राजनीति पर असर डालने की पुरजोर कोशिश करेंगे।

हम माँग करते हैं कि अठारह वर्ष की उम्र होने पर हमें मताधिकार मिले। इससे हममें जिम्मेदारी की भावना आयेगी और हमें इस बात का मौका मिल सकेगा कि हम अपना सड़क पर लड़ा जाने वाला संघर्ष लोकसभा में पहुँचा सकें।

विश्व के जो युवक उपनिवेशवाद के खिलाफ लड़ रहे हैं, उनके प्रति हमारी सहानुभूति है। लेकिन हम उन्हें यह चेतावनी भी देना चाहते हैं कि हिंसक तरीकों से उनके उद्देश्य की ही पराजय हो सकती है।

उपनिवेशवाद के विरुद्ध चलनेवाले पूरब और पश्चिम के सभी संघर्षात्मक अन्दोलनों को हम अपना नैतिक समर्थन देते हैं।

दुनिया के युवजन में उत्पीड़न, पाखंड, धोखेबाजी, संकीर्ण विचारधाराओं, सैनिकवाद और युद्ध के खिलाफ विद्रोह की जो भावना निरन्तर बढ़ रही है, उससे हम रोमांचित हैं। विश्व-युवा का यह आन्दोलन स्वतंत्रता को समानता के साथ जोड़ना चाहता है। हम अपने-आपको इस आन्दोलन का अंग मानते हैं। भारत में अहिंसक क्रान्ति के लिए काम करके हम आशा करते हैं कि विश्व-शान्ति के प्रति हम अपना फर्ज पूरा कर रहे हैं। हम फिर से राष्ट्रीय भावनात्मक एकता, धर्म-निरपेक्षता, सामाजिक तथा आर्थिक न्याय, लोकतंत्र और विश्वशान्ति में अपनी आस्था की पुष्टि करते हैं। (मूल अंग्रेजी से)

बापू की मीठी-मीठी बातें
(भाग-२)

लेखक : साने गुरुजी

मराठी के कोमल-करुण लेखनी के धनी स्व० साने गुरुजी ने बच्चों के लिए गांधीजी की प्रेरक तथा छोटी-छोटी घटनाओं को लिखा है। इन कहानियों का पहला भाग पहले छप चुका है। अब यह दूसरा भाग भी प्रकाशित हो गया है। मूल्य : रु० १.५०।

सर्व सेवा संघ प्रकाशन
राजघाट, वाराणसी-१

www.vinoba.in

लोकवस्त्र द्वारा मिथ्याचार से मुक्ति

सम्पादकजी,

७ मई के 'भूदान-यज्ञ' में श्री निर्मल भाई का खादी के बारे में विचार पढ़ा। यह हरेक खादी-कार्यकर्ता के लिए चुनौती है। उन्होंने बड़े मौके पर गांधीजी के नवसंस्करण की याद जोरदार शब्दों में दिलायी है, और यह संकेत किया है कि इस पर अमल करने का सबसे अच्छा अवसर यह शताब्दी-वर्ष है। आज खादी जिस रूप में पहुँची है अब वह आगे उस रूप में नहीं चल सकेगी। इसमें कोई शंका की गुञ्जाइश नहीं रह गयी है। जब ऐसी स्थिति है तो करना क्या है? जो काम अभी चल रहा है उसे विसर्जित करके नया काम नये सिरे से शुरू किया जाय।

आज स्थिति ऐसी हो गयी है कि खुले-आम बुनकर सड़क पर बैठकर खादी का कपड़ा ठीक खादी-भण्डार के मुकाबिले आधे दाम पर बेचता है, और यह कहता है कि यह वही कपड़ा है जो खादी-भण्डार में मिलता है। कहीं जाइए, अब लोग कहने लगे हैं कि आपके भण्डार से क्यों कपड़ा लिया जाय, जब कि बुनकर यही कपड़ा आधी कीमत लेकर घर में दे जाता है! ऐसी बात नहीं है कि यह बात किसीसे छिपी है। यह खुला सत्य है। वर्षों से राजाजी लोक-वस्त्र की बात कहते रहे हैं। हमारी राय में शायद गांधीजी आज होते तो वे भी लोक-वस्त्र की इजाजत देते, क्योंकि शुरू में उन्होंने मिल के ताने और चरखे के बाने को स्वदेशी नं०-१ कहा था। आज की स्थिति वास्तव में अधिकांश लोक-वस्त्र की ही है, लेकिन उस स्थिति को कोई भी मानने के लिए तैयार नहीं है। अगर कोई खुलेआम इसे स्वीकार करके कहता है तो वह नालायक और संस्था का विरोधी समझा जाता है। मैं नम्रता-पूर्वक आपसे पूछने की धृष्टता कर रहा हूँ कि जब गाँव-गाँव में खादी चलेगी तो क्या इस काम के लिए सबसे अच्छा मौका नहीं है कि हम इमानदारीपूर्वक यह घोषणा करें कि अमुक कपड़े में ताना मिल का है, इसलिए वह सस्ता है और अमुक शुद्ध खादी है जो दूनी महँगी है। फिर भी कुछ भावनाशील लोग होंगे जो महँगी खादी खरीदेंगे, बाकी लोक-वस्त्र। इस प्रकार हम इस असत्य कर्म से बच जायेंगे और आज जो गांधी के नाम पर इतना व्यापक रूप से असत्य का व्यापार चल रहा है, वह शायद समाप्त होगा।

आज मुझे यह लिखते दुःख हो रहा है। मुझे उन दिनों की बात भी याद आ रही है, जब हम लोगों ने खादीग्राम में मिल-वस्त्रों की होली जलायी थी। हम कहाँ से कहाँ पहुँच चुके हैं! शायद समय के कारण यह सब होता है। ऐसी परिस्थिति में अगर हम खादी को जिन्दा रखना चाहते हैं तो हमें लोकवस्त्र की योजना स्वीकार करने में कोई हिचक नहीं होनी चाहिए।

श्री निर्मल भाई ने अपने लेख में जो बेचैनी जाहिर की है वह शायद सर्वसाधारण कार्यकर्ताओं की है। अब ऐसा समय आ गया है जब इस विषय पर विचार होकर परिस्थिति के अनुसार कोई रास्ता निकालना चाहिए, नहीं तो हम कहीं के नहीं रहेंगे। यह स्थिति सामूहिक पुरुषार्थ द्वारा बदली जा सकती है।

मैं एक बात और कहना चाहता हूँ कि खादी के एकाध केन्द्र का इस दृष्टि से सर्वे किया जाय कि बुनकरों की सीधी बिक्री के कारण उस केन्द्र की स्थिति क्या है?

आपका,

खादीग्राम : मुंगेर — पारस

स्वास्थ्योपयोगी प्राकृतिक चिकित्सा की पुस्तकें

		लेखक	मूल्य
कुदरती उपचार		महात्मा गांधी	०-८०
आरोग्य की कुंजी		,, ,,	०-४४
रामनाम		,, ,,	०-५०
स्वस्थ रहना हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है	द्वितीय संस्करण	धर्मचन्द सरावगी	२-००
सरल योगासन	,, ,,	,, ,,	२-५०
यह कलकत्ता है	,, ,,	,, ,,	२-००
तन्दुरुस्त रहने के उपाय	प्रथम संस्करण	,, ,,	१-२५
स्वस्थ रहना सीखें	,, ,,	,, ,,	२-००
घरेलू प्राकृतिक चिकित्सा	,, ,,	,, ,,	०-७५
पचास साल बाद	,, ,,	,, ,,	२-००
उपवास से जीवन-रक्षा		अनुवादक ,, ,,	३-००
रोग से रोग-निवारण		स्वामी शिवानन्द	२०-००
How to live 365 day a year		John	22-05
Everybody guide to Nature cure		Benjamin	24-30
Fasting can save your life		Shelton	7-00
उपवास		शरण प्रसाद	१-२५
प्राकृतिक चिकित्सा-विधि		,, ,,	२-५०
पाचनतंत्र के रोगों की चिकित्सा		,, ,,	२-००
आहार और पोषण		झवेरभाई पटेल	१-५०
वनौषधि-शतक		रामनाथ वैद्य	२-५०

इन पुस्तकों के अतिरिक्त देशी-विदेशी लेखकों की भी अनेक पुस्तकें उपलब्ध हैं।

विशेष जानकारी के लिए सूचीपत्र मँगाइए।

एक्मे, ८।१, एसप्लानेड ईस्ट, कलकत्ता-१

www.vinoba.in

तत्त्वज्ञान

भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरू को दी गयी फांसी तथा गणेश शंकर विद्यार्थी के आत्म-बलिदान के प्रसंगों से क्षुब्ध कराँची-कांग्रेस-अधिवेशन के लोगों को सम्बोधित करते हुए २६ मार्च १९३१ को गांधीजी ने कहा था :—

"जो तरुण यह ईमानदारी से समझते हैं कि मैं हिन्दुस्तान का नुकसान कर रहा हूं, उन्हें अधिकार है कि वे यह बात संसार के सामने चिल्ला-चिल्लाकर कहें। पर तलवार के तत्त्वज्ञान को हमेशा के लिए तलाक दे देने के कारण मेरे पास अब केवल प्रेम का ही प्याला बचा है, जो मैं सबको दे रहा हूँ। अपने तरुण मित्रों के सामने भी अब मैं यही प्याला पकड़े हुए हूँ....।"

उसके बाद का इतिहास साची है कि देश ने तलवार के तत्त्वज्ञान को तलाक देनेवाले गांधी का साथ दिया। साम्राज्य-वाद की नींव हिली, भारत में लोकतंत्र की नींव पड़ी और संसार को मुक्ति का एक नया रास्ता मिला।

संसार आज बन्दूक की नली के तत्त्वज्ञान से और अधिक त्रस्त हुआ है। विनोबा संसार को वही प्रेम का प्याला पिलाकर बन्दूक के तत्त्वज्ञान को तलाक दिलाना चाहता है और देश में सच्चे स्वराज्य की स्थापना के लिए उसने नया रास्ता बताया है।

क्या हम वक्त को पहचानेंगे और महान कार्य में वक्त पर योग देंगे ?

गांधी रचनात्मक कार्यक्रम उपसमिति (राष्ट्रीय गांधी-जन्म-शताब्दी-समिति)
दुंकलिया भवन, कुन्दीगरों का भैरूं, जयपुर-३ राजस्थान द्वारा प्रसारित।

अखिल भारतीय समाजसेवी संस्थाओं का सम्मेलन

www.vinoba.in

गांधी जन्म-शताब्दी के सिलसिले में देश भर की कोई सवा सौ अखिल भारतीय समाजसेवी संस्थाओं का सम्मेलन हाल ही में ८, ९ व १० जून को नयी दिल्ली स्थित गांधी शान्ति-प्रतिष्ठान के नवनिर्मित भव्य भवन में आयोजित हुआ। उद्घाटन किया श्री जयप्रकाश नारायण ने और समारोप किया गांधी स्मारक निधि के अध्यक्ष श्री आर० आर० दिवाकर ने। भाषण करनेवालों में डा० सुशीला नैय्यर थीं, श्री एल० एम० श्रीकान्त थे और वैसे भाषण के लिए तो लगभग सभी प्रतिनिधि उत्सुक थे, पर पचास लोगों को ही मौका मिल पाया, बाकी को बेहद अफसोस रहा। खाने-पीने और ठहरने का प्रबन्ध बहुत शानदार था। सभी को हर तरह का आराम था, पर इस आराम के साथ देश की गरीबी, भुखमरी, बेकारी वगैरह पर बहुत दुःख था। बस, सब यह चाहते थे कि उनको भरपूर आराम मिलता रहे और देश व दुनिया की हालत जल्द-से-जल्द बदल जाय!

उद्घाटन करते हुए श्री जयप्रकाश नारायण सन् १९४२ के जयप्रकाश की तरह बार-बार हाथ उठाकर, मुक्का तानकर गर्जनात्मक ढंग से कह रहे थे कि बेहद शर्म की बात है कि आज भी बम्बई, कलकत्ता और दिल्ली में आदमी सुअरों की तरह गन्दी बस्तियों में रह रहे हैं। बिहार में 'टेनेन्सी ऐक्ट' होते हुए भी गरीबों के झोपड़े उजड़ रहे हैं। उन बेघरबारों की कोई सुननेवाला नहीं। हम सरकार के भरोसे हाथ रखे बैठे हैं। हमसे तो वे नक्सालपंथी ही अच्छे हैं। मेरी उनसे पूरी सहानुभूति है, आखिर वे उनके लिए कुछ कर तो रहे हैं! गरीबी, बेकारी, बेबसी, जात-पांत, ऊँच-नीच आदि के भेदभाववाले इस सामाजिक ढाँचे को बदलना ही होगा। इसके लिए जरूरत है सामाजिक क्रान्ति की। सही रास्ता तो 'गांधियन टेकनिक' ही है, पर उस पर अमल हो तब ना! (श्री जयप्रकाशजी के भाषण का अंश 'भूदान-यज्ञ' के पिछले अंक में प्रकाशित किया गया है। —सं०)

जयप्रकाशजी के इस उद्घाटन-भाषण का बार-बार हवाला देते हुए पचास प्रतिनिधियों के भाषण हुए। सभी आज की स्थिति से असन्तुष्ट लगे। उसे बदलने के लिए बेचैन भी प्रतीत हुए। पर वे सबके सब खोये-खोये-से दिखे। स्वयं हर तरह की सुख-सुविधाएँ उठाकर वे पिछड़े हुए गरीब तबके की हालत के बारे में बस सोच-सोचकर परेशान थे, जैसे कि फर्स्ट क्लास का मुसाफिर थर्ड क्लास की भीड़ की चीख-पुकार से परेशान हो उठता है।

संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने कर रहे कार्यों की तथा संकल्पित कार्यक्रमों की जानकारी दी। मिलजुलकर सबका एक कार्यक्रम क्या हो, इसकी भी चर्चा हुई।

कुछ ने यह भी कहा कि गांधीजी राजनैतिक आजादी प्राप्त करने के लिए जिये और साम्प्रदायिक सद्भावना की स्थापना के लिए उन्होंने अपने प्राणों की बलि दे डाली। वह खून आज भी टपक रहा है, उसे रोकना होगा।

श्री देवेन्द्रकुमार गुप्ता, अध्यक्ष, जनसम्पर्क समिति ने सम्मेलन की भूमिका बताते हुए शुरुआत की थी और जनसम्पर्क समिति के मंत्री श्री एस० एन० सुब्बाराव ने श्री जयप्रकाश नारायण के नेहरूजी के जमाने में प्रधानमंत्री और अब राष्ट्रपति न बनने की बात कहकर उनसे बहुत आशाएँ प्रकट कीं, जिसे सुनकर वे बोले: 'मैं राष्ट्रपति हो नहीं सकता, मैं जानता हूँ, ये सब फिजूल की बातें हैं। ये लोग मुझे बरदाश्त नहीं कर सकते!'

जातिवाद के बढ़ते हुए जहर को रोकने पर भी जोर दिया गया। बच्चों, युवकों, महिलाओं, सबमें गांधीजी के विचारों का प्रचार किया जाय, यह हजार बार दुहराया गया। चर्चाओं की अध्यक्षता सेण्ट्रल इन्स्टीट्यूट आव ट्रेनिंग इन पब्लिक कोआपरेशन के डायरेक्टर श्री जोन वर्नवास ने की।

विचार-मंथन के बाद प्रतिनिधि तीन गोष्ठियों में बँट गये और उन्होंने अलग-अलग महिला और बाल-कल्याण, युवक कार्यक्रम और ग्रामीण क्षेत्र में गरीबों और पिछले वर्गों के कार्यक्रमों के सम्बन्ध में विचार किया, जिसके निष्कर्ष अन्तिम दिन पढ़े गये। यह सम्मेलन केन्द्रीय गांधी जन्म-शताब्दी-समिति की तीन उपसमितियों के द्वारा बुलाया गया था। उनकी ओर से श्री पूर्णचन्द्र जैन, श्री एल० एम० श्रीकान्त, और डा० सुशीला नैय्यर ने भाषण किये। श्री आर० आर० दिवाकर ने सम्मेलन का समारोप करने के पूर्व श्री राधाकृष्ण के संयोजकत्व में पाँच सदस्यों की एक 'फालोअप कमेटी' की घोषणा की। आखिर में सम्मेलन की संयोजिका श्रीमति आत्मप्रभा गुप्ता ने सभी आगत जनों के प्रति आभार प्रकट किया और सम्मेलन तीन दिनों का सम्मिलन-मेला होकर पच्चीस हजार रुपयों के खर्च के साथ समाप्त हुआ!

—गुरुशरण

गांधीजी और राष्ट्रीय प्रवृत्तियाँ

लेखक : शंकरलाल बैंकर

श्री शंकरलाल बैंकर बहुत प्रारम्भ से ही गांधीजी के निकट संपर्क में रहे हैं और चरखा-प्रवृत्ति में तो लेखक की सेवाएँ उल्लेखनीय हैं। प्रस्तुत ग्रंथ में लेखक ने गांधीजी की राष्ट्रीय प्रवृत्तियों का संस्मरणात्मक इतिहास प्रस्तुत किया है। बड़ी-से-बड़ी और छोटी-से-छोटी, यानी दियासलाई की सींकों की गिनती रखने तक का ध्यान रखने तक की बातों का सरस वर्णन पाठक को स्पर्श किये बिना नहीं रहता।

गांधीजी के पारिवारिक और व्यवहार-दक्ष व्यक्तित्व को समझने के लिए यह उपयुक्त ग्रंथ है। मूल्य : १० रुपये मात्र।

सत्याग्रह-विचार

लेखक : विनोबाजी

सत्याग्रह के सम्बन्ध में विनोबाजी के विचारों का यह संकलन सत्याग्रह के विचार के विकासक्रम को समझने के लिए बड़ा उपयोगी है। मूल्य : रु० १.२५।

दी एसेंस ऑफ दी कुरान

संकलन : विनोबाजी

'दी एसेंस ऑफ दी कुरान' का यह तीसरा संस्करण अभी-अभी प्रकाशित हुआ है। इस बार सामग्री दो कालम में दी गयी है और मूल्य भी चार रुपये से घटाकर रु० २.५० कर दिया गया है। सुन्दर, आकर्षक छपाई।

सजिल्द प्रति का मूल्य : ३ रुपये।

सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी-१

www.vinoba.in

पटना जिलादान सम्पन्न

१२ जून को राँची में पटना जिलादान-समारोह सम्पन्न हुआ। पटना जिला के समाहर्ता तथा जिला ग्रामदान-प्राप्ति समिति के संयोजक श्री विद्यासागरजी ने जिलादान का कागज विनोबाजी को समर्पित किया। यह ज्ञात है कि पटना जिला में ग्रामदान का काम बहुत ही धीमी गति से हो रहा था और ऐसा प्रतीत होता था कि पटना का जिलादान बिहार में सबसे आखिर में होगा। परन्तु श्री विद्यासागरजी तथा उनके साथियों के अथक परिश्रम से और जिले के अन्य लोगों के सहयोग से जिलादान शीघ्र सम्पन्न हो सका।

पटना जिलादान के आँकड़े

ग्रामदान में शामिल

अनुमंडल	पंचा० संख्या	गाँव संख्या	जनसंख्या	रकबा	पंचा० संख्या	गाँव संख्या	जनसंख्या	रकबा
बाढ़	१३६	४८३	५,३४,७९२	३,४७,८०९	११५	४०६	४,२०९८६	१,७९,४८७
बिहार-शरीफ	२०९	८९१	८,९९,९१४	५,०९,५५८	१७९	७५८	७,०४,०४९	२,७०,५१८
सदर	८७	५५२	३,७०,८४६	२,०७,०४१	७१	४००	२,९२,९८१	१,२७,३१५
दानापुर	१३८	५५४	५,४२,६७७	२,६४,१९८	११३	४८४	४,२४,५३३	१,४४,९९६
	५७०	२,४८०	२३,४८,२२९	१३,२८,६०६	४७८	२,०४८	१८,४२,५४९	७,२२,३१६

शाहाबाद जिलादान की ओर

डुमराँव कैम्प, १४ जून। शाहाबाद जिलादान की तरफ तेजी से बढ़ रहा है। दान करने में जनता की रुचि है और साथ ही नये काम की तरफ मंगल भावना है। तभी तो इतनी तेजी से कई प्रखण्डदान हो चुके। अभी-अभी नावानगर तथा इटा दान हुआ है। राजपुर प्रखण्ड में इतनी तेजी से काम चला कि उसके १२ पंचायत-दान हो चुके हैं। साथ में सटा हुआ प्रखण्ड ब्रह्मपुर तथा समेरी में काम जोरों से चल रहा है। कार्यकर्ता जी-जान से काम कर रहे हैं। दूसरे अनुमण्डल भभुआ में भी काम लग चुका है। भभुआ के प्रखंडों में कार्यकर्ता इतनी धूप में भी पंचायत-पंचायत घूमकर काम कर रहे हैं। काम की तेजी, कार्यकर्ताओं की लगन तथा जनता का सहयोग देखकर लगता है शाहाबाद का शीघ्र दान हो जायेगा।

—सोमेश्वरनाथ सिन्हा

प्रखण्डदान

- एक विशेष जानकारी के अनुसार राँची जिले में बोलवा प्रखण्ड का प्रथम प्रखण्डदान हुआ है। हजारीबाग जिले के जरीडीह, केरेडारी, हंटरगंज तथा कसमार प्रखण्डों का प्रखण्डदान घोषित हुआ है। पलामू जिले में मेराल तथा गढ़वा प्रखण्डों का प्रखण्डदान हुआ।
- गाजीपुर (उ० प्र०) जिले में अब तक प्राप्त जानकारी के अनुसार ७२१ ग्रामदान, ६ प्रखण्डदान तथा १ तहसील-दान हुआ है।

कौसानी में महिला-शिविर

वाराणसी, १६ जून। उत्तरप्रदेश गांधी-जन्म-शताब्दी की महिला बाल कल्याण उपसमिति द्वारा लक्ष्मी आश्रम कौसानी (अल्मोड़ा) में सात दिनों के महिला-शिविर का आयोजन हुआ। इस शिविर में प्रदेश के विभिन्न अंचलों से आयी हुई बहनों ने गांधीजी के नारी-जागरण एवं पुनरुत्थान सम्बन्धी कार्यक्रमों का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त किया। अपने-अपने क्षेत्रों में इन शिविरार्थी बहनों ने गांधी-शताब्दी के कार्यक्रमों को व्यापक बनाने का संकल्प किया है। (सप्रेस)

महिलाओं की ग्राम-स्वराज्य यात्रा

टिहरी जिले के चम्बा विकास क्षेत्र में ७ जून से तीन महिलाओं—श्रीमती विशेश्वरी देवी, तारा देवी, और निर्मल बहिन—ने ग्राम-स्वराज्य यात्रा प्रारम्भ की है। श्रीमती विशेश्वरी देवी टिहरी के जाने-माने वकील स्व० हरिराम उनियाल की पत्नी हैं। दो साल पहले चम्बा के पास बादशाही थौल के शराबबन्दी आन्दोलन में स्त्रियों को आगे लाने में उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। तारा बहिन कई वर्षों तक रेडक्रास सोसायटी के केन्द्रों पर काम करती रही हैं और निर्मल बहिन लक्ष्मी आश्रम कौसानी व शांति-सेना विद्यालय इन्दौर की छात्रा रही हैं।

चम्बा विकास क्षेत्र में ५ टोलियाँ ग्रामदान-प्रचार व गाँव-गाँव में ग्राम-स्वराज्य के संकल्प करवाने की दृष्टि से घूम रही हैं।

—योगेशचन्द्र बहुगुणा

नगालैण्ड, मणिपुर में सर्वोदय-कार्य

पिछले छः महीनों में असम, नगालैंड और मणिपुर के लगभग साठ स्कूल-कालेजों में तथा तीन ग्रामदान-गांधी-शताब्दी-शिविरों में गया। शिवसागर जिले के मसजिदों और नगालैंड के गिरजाघरों में गांधी-विनोबा-विचार का प्रसार एवं सर्वधर्म-प्रार्थना हुई। विद्रोही नगाओं से मैत्री हुई, एक-दूसरे के नजदीक आये। अंग्रेजी "सर्वोदय" मासिक के पचपन वार्षिक ग्राहक बने, बारह ग्राहक असमिया "भूदान-यज्ञ" तथा तीन "मैत्री" हिन्दी मासिक के। सारी यात्रा तंत्रमुक्त व निधिमुक्त रही। चौदह अप्रैल '६९ को 'मणिपुर-प्रांतीय सर्वोदय-मण्डल' का गठन एवं शुभारम्भ हुआ।

—जगदीश थवानी

वार्षिक शुल्क : १० रु०; विदेश में २० रु०; या २५ शिलिंग या ३ डालर। एक प्रति : २० पैसे।
श्रीकृष्णदत्त भट्ट द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं इण्डियन प्रेस (प्रा०) लि० वाराणसी में मुद्रित।